आज़ादी का अमृत महोत्सव

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केंद्रीय विद्यालय पतरातू

Kendriya Vidyalaya Patratu

(स्थापित@ESTD :1981 Affiliation No: 3400012)

ई-पत्रिका (E-MAGAZINE)

The Journey of a Thousand miles begins with one small step.....

केन्द्रीय विद्यालय पतरातू , डीजल कॉलोनी पतरातू

KENDRIYA VIDYALAYA PATRATU

विद्यालय पत्रिका/ SCHOOL MAGAZINE - 2020 -2021

मुख्य संरक्षक /Chief Patron

1.श्री डी पी पटेल

उपायुक्त

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय राँची

2.श्री डी वी रामकृष्ण

सहायक आयुक्त

केन्द्रीय विद्यालय संगठन,

क्षेत्रीय कार्यालय राँची

3. श्री गोवर्द्धन कुमार

अध्यक्ष (नामित) विद्यालय प्रबंधन समिति एवं

SENIOR DEE, GOMOH, ECR

संरक्षक /Patron

श्री रुशिया चंद्र गोंड

प्राचार्य

केन्द्रीय विद्यालय पतरातू

केन्द्रीय विद्यालय पतरातू

NEW WINDOW OF LEARNING REACHING TO EVERYONE

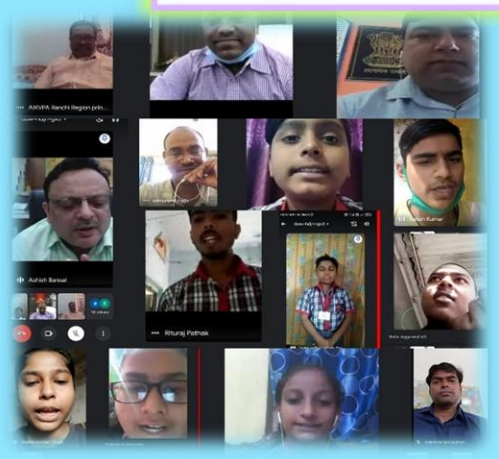

केन्द्रीय विद्यालय पतरातू , डीजल कॉलोनी पतरातू
KENDRIYA VIDYALAYA PATRATU
विद्यालय पत्रिका/ SCHOOL MAGAZINE - 2020 -2021

संपादकीय/Editorial Desk

1॰ श्री मनोरंजन कुमार टीजीटी (हिन्दी)

2. श्री निखिलेश महापात्रा टीजीटी (अंग्रेजी)

3. सुश्री हँसी कुंडू टीजीटी (संस्कृत)

4. मास्टर बंटी कुमार कक्षा 12 "अ"

5. मास्टर कुमार सागर कक्षा 12 "अ"

सलाहकार समिति

1 श्रीमती उषा राय (स्नात्कोत्तर हिन्दी शिक्षक)

2 श्री आशीष कुमार सिंह (स्नात्कोत्तर रसायनशास्त्र)

संयोजन :- विनीता परमार

कम्प्यूटर कार्य : श्री अमोद कुमार सिंह

कवर पेज – श्री ओम प्रकाश गुप्ता (कला शिक्षक) एवं मास्टर दिप्तोज्योति घोष 11 "अ

E-mail)kvpatratu@gmail.com
Website:www.kvpatratu.ac.in
Twitter-@KvPatratu
Facebook: https://www.facebook.com/kvpatratu

केन्द्रीय विद्यालय पतरातू

संदेश

यह जानकर बहुत खुशी हो रही है कि केन्द्रीय विद्यालय पतरातू "ई-विद्यालय पत्रिका"- 2020-2 का प्रकाशन करने जा रहा है। विद्यालय पत्रिका वर्ष भर की गतिविधियों की झांकी प्रस्तुत करती है जिसके माध्यम से विद्यालय की विशेषताओं एवं उपलब्धियों के बारे में सभी को जानने का अवसर मिलता है। पत्रिका के सृजन में विद्यालय के शिक्षकों एवं बच्चों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें प्रकाशित होने वाले लेख, कहानी, कविताओं तथा अन्य रचनाओं का संकलन विद्यालय के छात्रों एवं शिक्षकों द्वारा किया जाता है, फलस्वरूप बच्चों की प्रतिभा को निखारने का यह एक अनुपम अवसर प्रदान करता है।

मैं पत्रिका के लेखन व प्रकाशन कार्य से जुड़े सभी शिक्षकों एवं छात्रों का विषेश रूप से बधाई देता हूँ एवं प्राचार्य से वह अपेक्षा करता हूँ कि केन्द्रीय विद्यालय संगठन के लक्ष्य के अनुरूप विद्यालय में अपनी टीम के साथ मिलकर सभी पाठ्य सहगामी क्रियाओं का सुचारू रूप से करते रहेंगे ताकि बच्चों का बहुआयामी विकास संभव हो सके।

कोरोना विश्वमारी की विपरीत परिस्थितियों में बच्चों के बचपने को बचाये रखना बहुत ही कठिन हो गया है। अमीरी –गरीबी की खाई को पाटने वाले हमारे संस्थान में आज कल बच्चे और अभिभावक विपरीत परिस्थितियों से गुजर रहे हैं, ऐसे में शिक्षकों की जिम्मेदारी में निश्चित रूप से बदलाव आया है। ख़ुद की भावनाओं को जीवित रखने के साथ ऑनलाइन की चुनौतियों को स्वीकार करते हुए इस सृजन के कार्य को करना निश्चित ही सराहनीय है।

सभी को इस रचनात्मकता की बधाई एवं शुभकामनाएँ।

(डी पी पटेल)
उपायुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
रांची संभाग

MESSAGE

I am glad to see that Kendriya Vidyalaya Patratu is bringing out its school magazine . The school magazine mirrors the different faces of development of the students in academics as well as co-curricular activities and thus it will be a very rewarding experience for the children.

Children are like buds in a garden and should be carefully and lovingly nurtured, as they are the future of the nation and the citizens of tomorrow.

I congratulate the staff and the students for the commendable achievements. This is the result of dedication and hard work put in by you and the staff which have led the school towards greater heights of glory.

With best wishes

केन्द्रीय विद्यालय पतरातु

D V. Ramakrishana

(Assistant Commissioner)

Kendriya Vidyalaya Sangthan,

Ranchi region

CHAIRMAN'S MESSAGE

I am happy to know that Kendriya Vidyalaya Patratu is publishing its School E-Magazine 2021.

School magazines have a great educative value. They encourage students to think and write. In fact, young talent finds its first exposure through this medium. The magazine also records the achievements and various activities of the institution. I hope that this magazine would be successful in achieving these objectives.

My best wishes for the entire endeavour.

(Goverdhan Kumar)

Chairman (N) VMC

Senior DEE Gomoh,ECR

केन्द्रीय विद्यालय पतरातू

PRINCIPAL'S DESK

It gives me immense joy and happiness in a shape of e-magazine which is the revelation of the endeavour of our esteemed editorial board and my dear students. To reach a desired destination one has to take single step. We can proudly acclaim that being a part of the premier institution, Kendriya Vidyalaya Sangathan, we have taken up a pioneer step.

This magazine will be a milestone for our young minds and will encourage original thinking, imagination and inculcate positive attitude among students. Hard times are to test our ability of persistence. The wake of COVID-19 and complete lockdown are also testing us. The situation has motivated us to take innovative measures of teaching and our transaction with the students. This period will also teach us to broaden our mind set of different ways of learning. Literary intelligence is one of the aspects which have fathomless implications. We do not realize that our ability to stabilize an idea through writing opens hundreds of opportunities. I will develop that acumen, headship and determination to achieve what they aspire. I congratulate my team members for their tireless efforts and readiness in bringing out this E-magazine. May the Almighty keep everyone safe and sound.

Rushiya Chandra Gond

Principal

K.V.Patratu

संपादकीय

मुझे केंद्रीय विद्यालय पतरातू परिवार की ओर से इस विद्यालय पत्रिका को आप सभी को सुपुर्द करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। किसी भी इंसान की तरक्की तभी संभव है जब वह निरंतर रचनात्मकता के साथ किसी लक्ष्य की ओर अग्रसर रहता है। कला, संगीत, साहित्य सदैव से मनुष्य को अमर करता है।

कविता,कहानी या किसी अन्य विधा का लेखन अपने आप में एक रचनात्मक कार्य है। विशेष कर जब बच्चे कम उम्र में लिखना शुरू करते हैं तो यह उनके बौद्धिक क्षमता का विकास करने में और तेजी से सहायक होता है।

छोटे - छोटे बच्चों ने इस पत्रिका में अपनी - अपनी लेखनी के माध्यम से स्वयं को प्रस्तुत किया है। यह वर्तमान में तो उनका उत्साहवर्धन करेगा ही, भविष्य के लिए आशा की नई उम्मीद की किरण को भी जगाएगा और हो सकता है कि भारतीय साहित्य को इस पत्रिका के द्वारा भविष्य का नया सितारा भी मिल जाए। इन्हीं सब आशा के साथ मैं एक और उम्मीद करता हूँ कि आपको यह पत्रिका बेहद पसंद आयेगी।

केन्द्रीय विद्यालय पतरातू

मनोरंजन कुमार

टीजीटी (हिन्दी)

केवी पतरातू

Editorial

It's a matt er of immense joy bringing out an e-magazine before you. The pandemic has confined us within our houses but the lockdown cannot stop introspection, brainstorming, and churning of ideas into our minds. This will yield rather better output.

"Never let a thought shrivel and die

For want of a way to say it"- Mary O' Neill We envisage manifesting the experience, feeling and ideas of our promising writers. A flamboyant and vibrant idea must not be imprisoned within one's cell. So this serves as pedestal of expression. We firmly believe like Wordsworth "Tranquility is an opportunity".

Kendriya Vidyalaya Sangathan gives us ample opportunity to stretch our full wing and glide into the sky of imagination, etching new ideas and engineering our future. We nurture our young minds without any hitch. Our entire academic year is full of activities which sneakily broaden our knowledge and we become better assets of our society. The resonance of our spirit must resound throughout the world.

"Reading maketh a full man;

Conference a ready man;And writing an exact man" – Francis Bacon.I hope profoundly that this venture of our students will unfasten new horizon in their perspective and make each of them an ardent reader and thinker who can fabricate the world of better understanding and a better place to live in.I render my sincere gratitude to our Principal and team leader Sh. R. C. Gond for believing in us and being our backbone in every need. With invocation to all of your safety and well being….Happy reading! Your feedback and suggestion will serve as trailblazer for us.

Thanks in anticipation.

Nikhilesh Mohapatra

TGT (English)

KV Patratu

विषय सूची / Content | **रचनाकार/**Writer

	Glimpses of Kendriya Vidyalaya Patratu	**-Nikhilesh Mohapatra TGT (English)**

भाग /Part**- 1 अनिमानन्द तिग्गा की स्मृति में**

1	**TRIBUTE TO OUR TRUE WARRIOR : Late Animanand Tigga**	
2	भाई**,** मित्र और सहकर्मी के रूप में	डेविड एच तिग्गा टीजीटी(गणित)के.वी पतरातू
3	मरहूम दोस्त**,** बड़े भाई और बेहतरीन शिक्षक के नाम पत्र	मनोरंजन कुमार टीजीटी(हिन्दी)के.वी पतरातू
4	तुम लौट आओ न	उत्सव मोदी **X'**अ'

भाग /Part **2- छोटी बगिया की खुशबू**

भाग /Part **3- हिन्दी की सुगंध**

5	किस्मत	अतिया रहमानी **9"**अ"
6	मैं ढूंढ रहा हूँ अपनी कविता	कृष कुमार 2 दसवी 'अ'
7	हमारे अमर वीर भगत सिंह	एंजेलिना जॉली बागे दसवीं **'ब'**
8	किधर जा रहा है इंसान	खुशी "दसवीं-अ"
9	अक्षय	मनोरंजन कुमार
10	मोबाइल का जमाना	साक्षी नयन सप्तमी "अ"
11	आगे बढ़	राधिका नयन 6 **"A"**
12	आजादी का अमृत महोत्सव	उत्सव भारती दसवीं **'ब'**

केन्द्रीय विद्यालय पतरातू

13	एक बुढ़िया	आशी कुमारी नौंवी 'ब'
14	रॉल नंबर ट्वेंटी टू	विनीता परमार
15	जैसी करनी वैसी भरनी	अभिषेक कुमार नौंवी 'ब'
16	रामानुजन के लिए एक जुनून था गणित	कुमारी निशा बडाईक नवी ब
17	मन की शक्ति	पूर्णिमा कुमारी नौंवी 'ब'
18	माँ	उज्ज्वल भारती सातवीं 'अ'
19	पुस्तक-समीक्षा	मनोरंजन कुमार

भाग /**Part** 5- **Effervescence of English**

20	**Some interesting facts about wildlife vegetation and humans.**	**Anjana Gupta VIII 'B'**
21	**DREAM**	**Rizwanul Haque X 'B'**
22	**Amazing Facts about the animal**	**Riya Kumari IX "A"**
23	**VOID**	**ANJANI X "A"**

भाग /**Part** 5- संस्कृत

24	संस्कृत भाषायाः परिचयः	निधि कुमारी नवम "अ"
25	आदर्श छात्र:	उत्सव भारती दसवी 'ब'
26	महर्षिः वाल्मीकिः	स्वर्णा मंडल सप्तम "ब"
27	वैश्विकमहामारीकोरोणा	हंसी कुन्डु

केन्द्रीय विद्यालय पतरातू

28	सुभाषचन्द्र बोस	लकी भराली सप्तम “ब”
29	मम अभिलाषः	यश राज छठी 'ब '
30	सर्वदा जयं भवेत्	आदित्य राज आठवीं 'ब'

भाग /**Part** 6- गतिविधियाँ

ENGLISH SPEAKING
Q.1.
What is your favourite food??
PARVESH UTSAV 2021
K.V.PATRATU
(Ranchi Region)

केन्द्रीय विद्यालय पतरातू
रोपण कार्यक्रम
दिनांक 05-08-2021

केन्द्रीय विद्यालय पतरातू
डीजल कॉलोनी
जिला : रामगढ़, झारखण्ड
पिन : 829 120
KENDRIYA VIDYALAYA, PATRATU
DIESEL COLONY
DIST: RAMGARH, JHARKHAND
PIN- 829 120

Glimpses of Kendriya Vidyalaya Patratu

Nikhilesh Mohapatra TGT (English)

Kendriya Vidyalaya - Patratu, stationed in the mineral-haven state of Jharkhand was established on 1981.

The very foundation of education stresses upon 'Enlightening the mind with knowledge and dispelling away the darkness of ignorance' and Kendriya Vidyalaya Patratu has always stood upon this doctrine, undeterred.

Every activity undertaken, has been in obeyance with the fundamental of actively engaging the learner and nurturing him/her in an all-round manner. Even the limiting conditions of lockdown hasn't deterred the thriving amongst learners, rather inspiring them to modify their pattern of learning by adopting the Online medium. Students have surpassed hurdles and emerged victorious in this endeavour of adopting the "New Face of Learning".

The following School Report intends to present the major activities undertaken by the Vidyalaya . It depicts a plethora of achievements pulled off by the students accompanied by an omnibus of ventures realised by the Vidyalaya in the interest of the learners' obligation.

Academic Excellence :

Being the major benchmark to assess the School's performance - the academic achievement of the students was worth substantial appreciation. The overall pass percentage in Class X and XII board examination was 100% and 100 % respectively, with 94.6% from Class X , 95.6% of Class XII (Sci) and 89.0% from Class XII (Hum.) being the highest percentage secured individually to bring laurels to the School. The most remarkable aspect is the obdurate approach of the students to do their best despite the prevailing conditions of Covid-19 .

Other Achievements :

- Contextual to the "Namami Gange" programme , an Online Quiz under the name "Ganga Quest" was organised in the school wherein students from Class III - XII participated in laudatory numbers.

- Green Olympiad aimed at awakening a sense of belongingness towards the environment , simultaneously kindling the scientific temperament of young minds , too saw a healthy number of participation from students of Class IX - XII.

- 250 number of successfully registered candidates alongwith with entire batch of students from Class 6 to 12 appeared for the 'Performance of International Students Assessment (PISA) Test' aimed at enhancing the Critical and Creative Thinking Skills of learners.

- The Awakened Citizen Programme (ACP) aimed at bringing out the universal and unique possibilities' of a learner through a discourse of 16 modules has been successfully running upon the efforts of trained teachers.

- Number of students participated in IEO, IMO, NSO, NCO organized by SOF (Science Olympiad Foundation)

Science and Social Science Activities :

Students actively participated in Science and Social Science Exhibition with their prodigious Models and Ideas.

Games and Sports :

Under the expansive Fit India campaign, which highlights : "Fitness ka dose, aadhe ghante roz", students participated in various activities in their local conditions, accompanied by the school teachers who too showed their enthusiasm in this regard.

Students were given a boost of motivation regarding the role of Sports in our daily life from renowned Everest. climber "Megha Parmar" .

"National Sports Day" was celebrated to commemorate the birhday of Hockey Wizard Major Dhyan Chand, wherein students from III-XII participated in an Online Quiz prepared by the school.

CMP Activities for Primary Section :

A step towards qualitative improvement of primary education termed as CMP has been implemented effectively and our teachers are striving hard to utilize various programmes and activities throughout the year alongwith Back to Basics.

- Praveshotsav (School readiness programme) for Class-I was done.

- Celebration of festivals & days i.e Grand Parents Day, Children's day, Earth day, Tree Plantation, Community Lunch were celebrated with great Vigour .

-Fun Day is effectively celebrated every Saturday and activities of children's interest like Dance, music, Games and Sports, Art and Craft, Spoken English, Mental Maths are taken up and students take active participation.

भाग /Part -1

विद्यालय के भूतपूर्व स्नात्कोत्तर अंग्रेजी शिक्षक

अनिमानंद तिग्गा की स्मृति में.....

TRIBUTE TO OUR TRUE WARRIOR : (Late Animanand Tigga

"NO BEAUTY SHINES BRIGHTER THAN THAT OF A GOOD HEART".

-R.C Gond

Principal,K.V Patratu

And there could not be a better example than Mr. Animanand Tigga , PGT English , who served in Kendriya Vidyalaya Sangathan with the purest heart and modest approach. A teacher who not only exuded sobriety but humility to an extent beyond measure, he was a person close to everyone's heart. A true team leader, he always leaded from the front, taking up challenges , standing as a bright symbol of courage and perseverance for students and colleagues alike. Pupils confided in him and teachers found him an ideal go-to person for assistance of every sort.

A seasoned campaigner of KVS, he had made an impact on every individual he came across, every place he was stationed - be it Gumla, Latehar, Ranchi Bandipora (Jammu) or Patratu, students were left touched and indebted to the life lessons they got to learn from their English Teacher . The man with a lyrical voice , he was quite popular amongst students for breathing life into even the dullest conversations with his mellifluous tone. People often used to remark : If there's a voice made for speaking over microphone, it's that of Animanand Sir.

Not only his voice, but his quality of holding the assembly's attention , mesmerizing his listeners with inspirational talks was also a hard thing to go unnoticed.

This reminds of an instance when our school had been celebrating "Matru Bhasha Diwas" last year. Students from diverse cultural background displayed the essence of their language through various presentation. But what seemed missing at the end of the event was a song / presentation from this very state (Jharkhand) . Everybody was clueless when Animanand Sir stepped in. He took the mic and sang a meldious 'Nagpuri' song that was as soothing as it was inspirational. A matured orator , he often delivered crucial messages through his talks to the young mass and that was the very reason why students never wanted to miss the company of their dear 'Anima Sir', whether inside the class or out of it. Such were his qualities that he was admired as a true all-rounder , be it academics, sports, music or management ; it was hard to find a better person than him.

All the good times seemed so wonderful when fate struck horrendously upon us. It was the second week of May and amid the surging cases of Covid-19 , we got to know that Mr. Animanand had been admitted to the hospital under serious condition. All our sincere prayers were with him as every single member of our team wished for his speedy recovery. But as quote goes :

"Fate is like a strange, unpopular restaurant filled with odd little waiters who bring you things you never asked for and don't always like" , destiny had it's own despicable plans. It was the miserable night of 13th May, the clock struck twenty five minutes past one when a lightning struck upon us . A text

message declaring Animanand Sir's departure to the heavenly abode shattered each one of us. It was a news terrible to look at and extremely hard to believe. The person who sat next to us just a few days back was no more in his physical embodiment with us. Even till this day , it seems such a hard reality to accept.

"We never truly get over a loss but we can move forward and evolve from it."

Losing him is the worst pain we all have faced. But what seems more important at this crucial juncture, is to remember the aura of the person, the goodness that he spread and the positivity that he exuded. We need to fill our healing heart with his sublime memories that shall be cherished forever. For all eternity, he shall remain amongst us : as the ideal torchbearer we ever knew - our dear Animanand Sir !!

भाई, मित्र और सहकर्मी के रूप में

- डेविड एच तिग्गा

टीजीटी (गणित) के .वी पतरातू

सन 2004 जून महीने की बात है जब पहली बार हम दोनों की मुलाकात हुई। बात कर रहा हूँ मेरे और अनिमानन्द जी के बारे। हम दोनों जमशेदपुर के लोयोला कॉलेज ऑफ एजुकेशन में बी.एड. के प्रशिक्षण हेतु वहाँ एडमिशन लिए थे। मिलने के बाद पता चला की हम दोनों का गाँव लोहरदगा में अगल बगल ही है । हम दोनों का एक ही उपनाम [गोत्र] होने के कारण सभी हम दोनों को सगे भाई समझते थे । कॉलेज में हम काफी अच्छे मित्र बन चुके थे । हम दोनों अपने घर से करीब 200 KM दूर थे इसलिए एक दूसरे के सुख-दुःख के समय हमेशा साथ थे कॉलेज खत्म करने के बाद हम दोनों राँची आ गए और एक ही स्कूल में हम दोनों ने शिक्षक के रूप में पदभार ग्रहण किया । दोनों का विषय अलग होने के कारण जरुरत के हिसाब से एक दूसरी की हमेशा मदद किया करते थे । कुछ महीनों के बाद वो लोहरदग्गा के स्कूल और मै राँची में ही दूसरे स्कूल में शिक्षण का काम करने लगे । इसके बाद हम दोनों ने एक साथ 2007 में केन्द्रीय विद्यालय संगठन में पदभार सम्भाला । इस दौरान हर दिन हमारे बीच बातचीत होती रहती थी। और जब भी हम गाँव जाते एक दूसरे से जरुर मिलते थे। हम दोनों को एक साथ पदोन्नति का अवसर प्राप्त हुआ और इसके बाद हम दोनों एक ही विद्यालय [के.वि पतरातू] में फिर से एक बार एक साथ थे । हम दोनों का एक साथ विद्यालय आना - जाना लंच करना और काम करना जारी रहा।

उस रात को मैं नहीं भूल सकता जब रात के 1:15 बजे मुझे उनके देहांत का दुखद समाचार सुनने को मिला । विश्वास ही नहीं हो पा रहा था कि मैंने सही सुना या गलत ? आज भी विश्वास नहीं हो पाता है कि यह घटना घटित हुआ । परन्तु एक बात है कि वो हमेशा एक भाई, मित्र और सहकर्मी से बढ़कर मेरे दिल में वास करेंगे । “ बहुत खुबसूरत होते हैं वो पल जब कोई दोस्त

केन्द्रीय विद्यालय पतरातू

साथ होते हैं लेकिन उतना ही दुखदायी होते हैं वो लम्हे जब दूर होने पर वो हमें याद आते हैं।"अनिमानंद तुम हमें हमेशा याद आओगे ।

मरहूम दोस्त, बड़े भाई और बेहतरीन शिक्षक के नाम पत्र

-मनोरंजन कुमार
टीजीटी(हिन्दी)के.वी पतरातू

बड़े भाई,

सलाम।

मेरा यह खुला पत्र, आपको कभी नहीं मिलेगा, फिर भी मैं टूटे हुए दिल और मष्तिष्क के टूट चुके हिस्से को जोड़ने के प्रयास से लिख रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि मेरा ये पत्र आपको कभी भी, किसी भी सूरत में पहुँचने वाला नहीं है। मैं इसे दिल की तसल्ली के लिए महज इसे एक झूठा दिलासा मान सकता हूँ। तुम्हें कैसे याद करूँ ये मुझे शायद समझ नहीं आता है, मगर एक सच्चाई ये है कि मैंने तुम्हें भूलने की भी भरसक कोशिश की है।

मेरे दोस्त,

मैंने जब केंद्रीय विद्यालय पतरातू में कदम रखा तो आप पहले शख्स रहे जिनसे मेरी आत्मीय लगाव सा हो गया। साथ बैठना, खाना, काम करना, बातें करना ये सब चीजें थीं जिसने हमें जोड़ दिया। दो साल से कम समय में ही आपसे इतना जुड़ गया कि हर मामले में आपकी राय मेरे लिए जरूरी सी हो गई थी। चाहे वह विद्यालय के कार्य हों, पढ़ाई के तरीके हो या फिर कोई भी कार्यलयी काम उसमें आपसे सलाह - मशविरा मेरे लिए अपरिहार्य और अनिवार्य था। आपके साथ रहते -रहते मैं आपसे विद्यालय के एक - एक काम को दिलचस्पी लेकर ढंग से करने का हुनर सीख रहा था। आपके पढ़ाने के तौर - तरीके का क्षमता और काबिलियत और बात करने का वो सलीका, तमीज़ जिसका मैं कायल था, ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान अक्सर मैं आपको सुना करता था, आपके छात्रों से उस मधुर शैली में बात करना, छात्रों के सवाल-जवाब पर वो हल्की सी मुस्कान अब भी मेरी स्मृति को कुरेद देती है। औ हो सके तो मैं आपके उन सभी गुणों को हूबहू अपनाने का प्रयास करूँगा।

बड़े भाई,

मैं जब यहाँ अपनी नौकरी करने आया तो मेरे मन में कई सवाल थे, मुझे नहीं मालूम था कि कैसे लोगों से मिलूँगा, लोग मुझे किस तरह समझेंगे, मुझे नहीं पता था कि कौन मेरे से जुड़ पाएगा और कौन मुझे समझ पाएगा ? लेकिन आप इन मेरे सारे सवालों के हल थे। आपने पहले दिन ही अपना टिफ़िन मुझसे साझा किया और कहा कि " अरे खाओ! शर्माओ मत। मैं भी तुम्हारे जैसा ही था।"

खाना साझा करके साथ खाने का यह सिलसिला जब शुरू हुआ तो फिर आखिरी समय तक चला। मुझे लंच पर आज भी आपकी कमी महसूस होती है। सच तो यह है कि अब मैं खाना साझा करने तक से डरता हूँ। आप जब कभी कुछ स्पेशल लाते थे तो बड़े गर्मजोशी से मुझे पुकारकर

कहते,"ऐ! मनोरंजन ! देखो तुम्हारे लिए क्या लाया हूँ।" ये शब्द अब बस शब्द रह गए हैं, इन्हें कोई आवाज़ देने वाला नहीं है। हम दोनों साहित्य के छात्र रहे, इस धागे ने भी हमें जोड़ने को और बढ़ावा दिया। आपसे मैं बड़ी सहजता से निजी जिंदगी और साहित्यिक चर्चा कर लेता था। मैं आपके साथ अक्सर गाने और वीडियो देखा करता और शायद हम दोनों काम करते - करते इन गानों में इतने मशगूल हो जाते थे कि हमें बांकियों से कोई मतलब ही नहीं रहता था। शुरुआत के दिनों में ही आपने अपने साथ मुझे CCA से जोड़ दिया। जब कभी कोई काम मुझसे नहीं होता था तो मैं आपसे कहता कि ये मुझसे नहीं होगा, आप इसको देख लीजिए, तब और आप बड़े आराम से कहते कि चिल्ल करो! मैं कर लूँगा। शायद कई बार मैं यह बातें अधिकार से कह जाता था, जिसमें भरोसे के साथ विश्वास भी बहुत ज्यादा था। वही भाव आपका भी मेरे प्रति था, जिसे हमेशा मैं एक उपलब्धि मानता हूँ। मैं जो कुछ भी लिखता आप उसे पढ़ते और अक्सर उस पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष दोनों तरह से टिप्पणी जरूर देते थे। उसमें सुधार की गुंजाइश और सलाह जो कुछ भी होता आप कहते। आप अक्सर मुझसे यह कहा करते थे कि तुम्हारे लेखनी में 'थॉट प्रोविकिंग' इसे और आने दो। अभी से तुम एक जॉनर पकड़ कर काम करो तो और बेहतर रहेगा। ये सलाह और हौसला अफजाई मेरे दिल को सुकूँ पहुंचाने वाली होती थी।

कई बार जब मैं किसी कारणवश गुस्से में होता था तो आप मुस्कुराते हुए बड़े प्रेम से कहते कि "अभी से इतना गुस्सा करोगे तो कैसे काम चलेगा?" और मेरा गुस्सा तुरंत काफ़ूर हो जाता था।

यदा - कदा आपके साथ क्रिकेट खेलने का मुझे मौका मिला। आपने मुझे एक दिन अपने गति से क्लीन बोल्ड कर दिया था, और मैं हक्का - बक्का सा था, क्या गेंद डाली थी आपने ! सटीक यॉर्कर, वो भी एक प्रोफेशनल क्रिकेटर की तरह।

आपके साथ बैठना, बातें करना, कॉफ़ी पीना, खाना खाना, खेलना, टहलना, आपके गीत सुनना ये सब अब भी मेरे आँखों के सामने है। आपका यह पूछना कि "मनोरंजन! काफ़ी बचा है क्या ?" अब भी ज़ेहन में बसा है।

कोविड के दूसरी लहर के शुरुआती दौर में जब मैं बीमार पड़ा तो आप बिल्कुल बड़े भाई की तरह मेरा समाचार रख रहे थे। उस दिन मेरा यह विश्वास और दृढ़ हुआ कि आप मेरा कितना ख़्याल रखते हैं बिल्कुल एक बड़े भाई की तरह।

मुझे आज भी याद है जब आपने 16 अप्रैल को कहा कि मैं स्कूल आया हूँ कुछ काम से आ रहा हूँ तेरे पास। कॉफ़ी बनाकर रखो।

4 मई को जब आप आईसीयू में थे और आपसे जब मैं बात कर रहा था तो मेरे ये पूछने पर कि कैसे हैं आप ?" आपने ये कहा कि "मैं ठीक हूँ, तुम घर पहुँच गए हो,अपना ध्यान रखो। " आपको तब भी स्वयं से ज्यादा मेरी चिंता थी। हालाँकि मैं आपसे हमेशा फोन के माध्यम से जुड़ा था, आपकी खबर ले रहा था और मुझे लगा कि आप जल्द ही ठीक होकर आ रहे हैं। बारह मई के दोपहर में जब आप केवल सुन रहे थे तो

मैंने कहा कि आप जल्द वापिस घर आ रहे हैं, आप अपने विल को मजबूत कीजिए कि बस आप घर आ रहे हैं। हालाँकि अंदर से मैं डर गया था, फिर भी मैंने तभी भी नहीं सोचा कि ये आपसे मेरी आख़िरी बात होगी। वो बात जो एकतरफ़ा थी, जिसका आपने जवाब नहीं दिया, वो अधूरी बातचीत जिसे मैं कभी भी पूरा ना कर सकूँगा ....

बड़े भाई,

मैंने बहुत लोगों को इस नश्वर संसार से अलविदा कहते हुए देखा, सुना, और जाना लेकिन आप पहले शख्स हैं जिनके अलविदा कहने को मैंने महसूस किया।

आप जब भी मेरे पास होते थे मुझे लगता था कि मेरे सिर पर राहत की छतरीनहीं बड़ा सा महल है। आपसे मैं किसी भी प्रकार का मदद माँग लिया करता था, आपसे किसी भी प्रकार की बातें साझा कर लिया करता था। आपके जाने से आपकी जगह खाली हो गई जिसे ना कोई पूर्ण कर सकता और ना ही कोई आपकी जगह ले सकता, कभी भी नहीं।

Rest In POWER & Rest In PEACE.

मेरे दोस्त, भाई आपको मेरा सलाम पहुँचे.

.....

तुम लौट आओ न

-उत्सव मोदी X'अ'

जिंदगी में मौज थी,

चेहरे पर मुस्कुराहट थी,

यह बात तब की थी

जब हमारी जिंदगी में चहचहाहट थी।

हमें पढ़ाते थे,

हमारे साथ मौज मनाते थे,

बच्चे खिल उठते थे,

जब अनिमानंद सर आते थे।

हंसी मजाक कर लेते थे,

शिक्षकों का दिल जीत लेते थे,

अंदर ही अंदर खुशी होती थी

जब सर असेंबली में माइक थाम लेते थे।

आपकी तस्वीर दिल में छप जाएगी,

वह हसीन लम्हे बड़ा तड़पाएगी,

स्कूल का क्लासरूम हो या असेंबली का ग्राउंड

सर, आपकी बहुत याद आएगी ।।

आपकी वह प्यारी प्यारी बातें, अब हमें कौन सुनाएगा।

स्टाफ रूम का वह चेयर, आपका बहुत याद दिलाएगा।

आपकी मौजूदगी में बीते कुछ पल दिल को दुखाएगा।

आपका यूँ छोड़ जाना, हमें बड़ा रुलाएगा।

स्कूल के ग्रुप में आपके मैसेज का इंतजार करता हूँ,

कि लौट आओ आप खुदा से यह फरियाद करता हूँ,

हम सबकी इस ख्वाहिश को कुछ इस कदर जान जाओ ना, प्लीज सर, वापस आ जाओ ना

वापस आ जाओ ना।।

.....

भाग /Part-2

छोटी बगिया की खुशबू.....

HAPPY PARENTS DAY
I Love My Parents
My best Parents
1st June 2021
GLOBAL PARENTS DAY

3rd June 2021
WORLD
BICYCLE DAY

12 May
INTERNATIONAL NURSE DAY

5th June 2021
World
ENVIRONMENT DAY

9th May 2021
MOTHER'S DAY

31st May 202
WORLD NO TOBACCO DAY

18th May 2021
INTERNATIONAL
MUSEUM
DAY

JANMASHTMI SPECIAL
30-08-21

Eid Mubarak
14th May 2021
Eid-ul-Fitr

Kritin Bhardwaj (5B)

Bullet (Royal Enfield)

Kritin Bhardwaj (5B)

Dog

Joya Angel (5B)

Shital Kumari (5B)

Doll

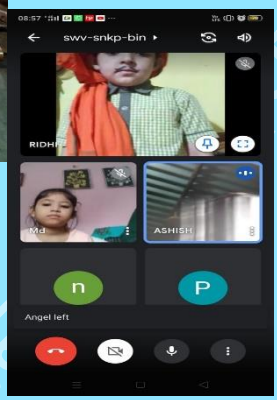

भाग /Part-3

हिन्दी की सुगंध

1. कवितायेँ
2. कथा-कहन
3. लेख - विचार
4. पुस्तक समीक्षा

(1)

किस्मत

- अतिया रहमानी कक्षा-9"अ"

ऐ बन्दे ज़िन्दगी तेरी किस्मत की गुलाम हो गई

जो चाहा था तूने वो तुझको कभी न मिला

जो न चाहा तूने कभी वो किस्मत दे गई

ऐ बन्दे ज़िन्दगी तेरी किस्मत की गुलाम हो गई

नेकी और सच्चाई की राहों पर चलता रह गया

ये झूठी किस्मत तुझको बस ग़मों की शोहरत दे गई

ऐ बन्दे ज़िन्दगी तेरी किस्मत की गुलाम हो गई।

(2)

मैं ढूंढ रहा हूँ अपनी कविता

- कृष कुमार 2 दसवी 'अ'

अंतर्मन के अल्फाजों में
कुछ ख्वाबों में , कुछ ख्यालों में ,
कुछ दिनचर्या के काजो में ....
मैं ढूंढ रहा हूँ अपनी कविता ,
फूटपाथ पे सोए लोगो में ,
कुछ भूखे - प्यासे बच्चो में ,
कुछ निर्धनता के सायो में ......
मैं ढूंढ रहा हूँ अपनी कविता ,
पहाड़ के खंडर गांवों में ,
कुछ शहर को दौड़ते लोगो में ,
कुछ आस लगाए लोगो में ......
मैं ढूंढ रहा हूँ अपनी कविता ,
शहरों की संकुची गलियों में ,
कुछ बंद कमरे के पहरो में ,
कुछ झूठ ओढ़ते चेहरों में .....
मैं ढूंढ रहा हूँ अपनी कविता ,
अपने भारत की माटी में ,
कुछ हिंदू - मुस्लिम के बातों में ,
कुछ बॉर्डर के हालातो में ......
मैं ढूंढ रहा हूँ अपनी कविता ,
राजनीति के कीचड़ में ,
कुछ जुमलो में कुछ वादों में ,
कुछ घोटालों की यादों में .....
मैं ढूंढ रहा हूँ अपनी कविता ,
शर्म हया के मोल भाव में ,
कुछ चीख में , कुछ पीड़ा में ,
कुछ होते नितदिनो के घाव में ....
मैं ढूंढ रहा हूँ अपनी कविता ,
होते हर रोज गुनाहों में ,
कुछ दुर्बल को दबाने में ,
कुछ प्रबल की छिपाने में .....
मैं ढूंढ रहा हूँ अपनी कविता ,
अलंकार , सुर , सदियों में ,
कुछ रंगो में , कुछ छंदों में ,
कुछ प्रेम रोगों के नदियों में .....
मैं ढूंढ रहा हूँ अपनी कविता ,
बचपन के विस्तृत माया में ,
कुछ पापा के ऊंचे कंधो में ,
कुछ मां के आंचल की छाया में ......
मैं ढूंढ रहा हूँ अपनी कविता ....

(3)

हमारे अमर वीर भगत सिंह

-एंजेलिना जॉली बागे दसवीं 'ब'

देश की खातिर मर मिटने को 24 घंटे तैयार था ।

छोटी सी उम्र में आजादी का सर पर भूत सवार था ।

इंकलाब जिंदाबाद, इंकलाब जिंदाबाद ।

कानून कायदे अंग्रेजों के पल में कर दिए ढेर

था ऐसा भगत सिंह शेर,

था ऐसा भगत सिंह शेर ।

देश की खातिर मर मिटने को 24 घंटे तैयार था ।

छोटी सी उम्र में आजादी का सर पर भूत सवार था ।

जय हिंद ।

जय भारत ।।

(4)

किधर जा रहा है इंसान

-खुशी "दसवीं-अ"

मन की मुरादा लिये मंदिर, मस्जिद वह गुरूद्वारा।

किसी के प्रति प्रेम नहीं , बस क्रोध का पिटारा।

उनका क्या हुआ होगा , जिनकी नियत हो खराब।

दोष वह इर्ष्या कर, पिये धनुरा और शराब।

कभी किसी की सहायता ना की , दुःख में दिया ना साथ।

फ़िर ईश्वर, अल्लाह वह गुरु नानक का, क्यो हो उन पर हाथ।

मन से बना इंसान, दिल से दयावान।

मिट्टी से देह बनी, कर्म से ऊर्जावान।

आपने अहांकर से भरा हुआ है मानव।

कर्म से हीन होकर बन गया है दानव।

किस्मत के सहारे जी रहा आज का इंसान।

(5)

अक्षय

-मनोरंजन कुमार

सूर्य कभी अस्त नहीं होते,

मनुष्य कभी परास्त नहीं होता

गर्दिश ए अय्याम से तो सूरज भी कभी मुक्त नहीं होता

और एक साथ बिखेर नहीं पाता है पूरी पृथ्वी पर अपनी छटा

इंसान भी फँस जाता है

समय के पाश में

और उलझ कर रह जाता दुनियावी माया में

जैसे सूरज को निगल लेता है ग्रहण

वैसे ही मानव को निगल जाता है सुख

इंसान दुःखों से बाहर

आना सीखता है

उसी सूरज से

जो बादलों को हमेशा चीरकर बाहर आता है

फिर अँधेरे का कर देता है सर्वनाश।"

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

(6)

मोबाइल का जमाना

-साक्षी नयन सप्तमी "अ"

था टीचर का ब्लैकबोर्ड ,कभी ज्ञान का खजाना हुआ ये किस्सा पुराना , अब है मोबाइल का जमाना
मिल जाते है मोबाइल पर ही गुरुजी
कहते वहीं से तुम , पढ़ाई करो शुरूजी
अब मोबाइल में टीचर ,टीचर के पास मोबाइल
देखते देखते सारे स्टूडेंट करने लगे स्माइल
बच्चे अब कर लेते है, वहीं से आज्ञा का पालन
पढ़ाई के नाम पर होता, गेम का संचालन
ऑनलाइन पढ़ाई से मम्मी पापा भी खुश
नहीं पता वहीं से लूडो खेल रहा है उनका दुष्ट
अब टीचर की डांट से भी बच्चे होते बड़े प्रसन्न
क्योंकि टीचर को चुप करने का उनके पास है बटन
टीचर मोबाइल से थोड़ा थोड़ा ही पढ़ाएंगे
नहीं तो बच्चे मोबाइल बंद करके भाग जाएंगे
अब सारे टीचर मोबाइल पर ही पढ़ाएंगे
मम्मी पापा भी खुश की बच्चे कुछ का दिखाएंगे

(7)

आगे बढ़

-राधिका नयन 6 "A"

हौसला रख आगे बढ़ने का

मुश्किलों से लड़ने का

यही तो एक तरीका है

ऊंची उड़ान भरने का

लड़खड़ा भी जाएं गर

कदम तो गम न कर

यही तो वक्त है तेरा

कुछ कर गुजरने का

भले ही राहों में मिले

पत्थर तो मिलने दे

हिम्मत कर आगे बढ़

तेरे ही पास है हर हल

बस सर्व रख के देख

यही तो वक्त है

पत्थर के फूल बनने का

बस एक बार भरोसा

कर ले तू खुद पर

मजा तुझे भी आने लगेगा

फिर गिरते गिरते संभलने का

(8)

आजादी का अमृत महोत्सव

उत्सव भारती दसवीं 'ब'

आजादी का अमृत महोत्सव,
भारत वासी मना रहे।
अमर शहीदों की बलिदानों को
अपने दिल में बसा रहे।
जो गोली खाकर भारत माँ की जय बोले,
नमन है उन वीर जवानों को
नया इतिहास लिखने वालों को
भारत की लाज बचाने वालों को
गाँधी, सुभाष के शुभ कामों को
आज हम सबको बता रहे।
आजादी का अमृत महोत्सव
भारत वासी मना रहे।।
आजादी के थे वो दीवाने,
जो फांसी के फंदे पर झूल गये।
खुद को माफ़ न कर पायेंगे,
अगर उन्हें हम भूल गये।
वीर शहीदों की गाथायें,
आज हम सबको सुना रहे।
आजादी का अमृत महोत्सव,
भारत वासी मना रहे।।
फौलादी संकल्पों ने जिनके,
भारत को स्वतंत्र कराया।
सर उंचा हिमालय की रखने के खातिर,
जिन्होंने अपने प्राण गवाया।
माँ-बहनों की सूनी हुई कलाई,
पत्थर कर ली सिने को।
लक्ष्मीबाई, सावित्री फुले की अमर कहनी
सुना रहे।
आजादी का अमृत महोत्सव,
भारत वासी मना रहे।।
जिस मिट्टी ने लहू पिया,
वह फूल खिलाएगा ही।
एक दिन देश हमारा भारत,
सबसे आगे जायेगा ही।
नफरत को गले लगाने वालों के आगे,
भारत कभी ना झुक पायेगा।
अपनी मेहनत और लगन से,
इतिहास नया लिख पायेगा।
स्टार्टअप इंडिया, स्टैंडअप इंडिया से
भारत को आत्मनिर्भर बना रहे।
आजादी का अमृत महोत्सव,
भारत वासी मना रहे।।

एक बुढ़िया

-आशी कुमारी नौंवी 'ब'

एक गांव में एक सूखी परिवार रहता था। उस परिवार में सरिता ओर मोहन नाम के पति - पत्नी थे ओर उनके तीन बेटे राजू , सुधीर ओर विशाल थे। इनमें से राजू सबसे बड़ा भाई था। एक दिन मोहन की बीमारी के कारण मृत्यु हो जाती है। अब सरिता अकेले ही अपने बच्चों क पालन - पोषण करती थी। धीरे-धीरे उसके बच्चे बड़े हो गए थे ओर राजू का विवाह भी हो गया था। कुछ वर्षो के बाद सुधीर ओर विशाल की भी शादी हो गई । सरिता की तीनों बहुओं को वह बिल्कुल न भाती थी । वे हमेशा उसे भुरा - भला कह कर उसका अपमान करती थी । वे उसे समय पर खाना भी नहीं देती थी । अपनी बहुओं का ये व्यवहार देख कर वह बहुत दुःखी हुई और उसने उनके सामने शर्त रखी कि जो भी उसका सबसे ज्यादा ख्याल रखेगा वह अपनी सारी सम्पत्ति उसके नाम कर देगी। फिर क्या था वे तीनों बहुएं अपनी सास की सेवा - सत्कार में लग जाती है । अब सरिता को समय पर खाना भी मिलता था ओर उसे अपनी बहुओं के अपशब्द भी नहीं सुनने पड़ते थे । कुछ महीने के बाद ही सरिता की दमा के कारण तबीयत खराब होने लगती है और उसके इलाज में बहुत सारे पैसे खर्च हो जाते है । यह सब सुनकर उसकी बहुएं सोचती है कि अगर ऐसे ही कुछ दिन और चलता रहा तो जो पैसे हमारे पास है वो भी इस बुढ़िया के इलाज में खर्च हो जाएंगे । ये सब बातो से सरिता की बड़ी बहू बहुत परेशान हो जाती है और गुस्से में आकर वो सरिता को घर से निकाल देती है । अब सरिता के पास कोई घर न था । वह अपनी इस बीमारी के हालत में रहने के लिए घर ढूंढ ने लगती है । परंतु गांव में किसी ने भी उसे सहारा नहीं दिया । उसी गांव में एक पंद्रह वर्षीय बालक रहता था । उसके माता - पिता की दो वर्ष पहले ही मृत्यु हो गई थी । जब उसने देखा कि एक बूढ़ी औरत घर के लिए इधर - उधर भटक रही है तो उसे उस पर दया आ जाती है । और वह सरिता को अपने घर में सहारा दे देता है । उसे पता था कि सरिता अब बस कुछ ही दिनों कि मेहमान है फिर भी वह उसका बहुत ध्यान रखता था । उस बच्चे का प्रेम और अपने प्रति सम्मान देखकर सरिता का दिल भर आता है और वह अपनी सम्पत्ति उस बच्चे के नाम कर देती है ।

उद्देश्य - हमें अपने माता - पिता या अपने से बड़ों को निस्वार्थ भाव से सेवा और सम्मान करना चाहिए

रॉल नंबर ट्वेंटी टू

-विनीता परमार

धुली हुई सड़क पर नहाई हुई सुबह में लगभग चार महीने बाद प्रसन्ना मैडम ने अपनी कार निकाली है। आमतौर पर वो गाड़ी तभी निकालती हैं जब सड़कें सीधी हो भीड़-भाड़ कम हो। एक साल हुए घर में कार तो आ गई लेकिन गाड़ी को दायें - बाएँ, आगे - पीछे करने में दिक्कत के कारण प्रसन्ना मैडम ऑटो से ही स्कूल जातीं हैं। पिछले दिनों से शहर में छाई मनहूस चुप्पी के बाद आज स्कूल जाने का मौका मिला है। स्कूल की गेट पर पहुँचते ही गार्ड ने गाड़ी को गेट के बाहर ही फुटपाथ पर लगाने बोल दिया। विद्यालय के बाहर लंबे - लंबे गाजर घास के पौधे उगे हुए हैं उनके सफेद फूल प्रस्फुटित हो चुके हैं। कुछ फूल बीज बन मिट्टी में यूँ गिर चुके हैं जैसे पिछले तीन महीने की प्रसन्ना मैडम की स्मृतियाँ। विद्यालय गेट के अंदर आते ही मैडम को ऐसे लगा पीछे से कोई गुड मॉर्निंग बोला। उस गुड मॉर्निंग की आवाज़ पीछे खींचने लगी। आवाजें भी अजीब होती हैं वो अपने उत्पति स्थान पर युगों तक बनी रहती हैं। किसी बच्चे के गुड मॉर्निंग के बाद अपने जवाब गुड मॉर्निंग को ढूँढती प्रसन्ना मैडम कहीं खो गईं।

अप्रैल के पहले दिन से शुरू होता है नया सेशन। वही बच्चे अगली कक्षा में जाते हैं लेकिन पहले दिन का अहसास एक फुर्ती भर देता है। अच्छी साड़ी पहनने के जोश में अपने अंदर एक प्रतिज्ञा कि जो पिछले सत्र में कमी रही उस कमी को दूर करूंगी। पहला दिन और नयी कोंपलों का प्रवेश सब कुछ नया - नया। वही असेंबली ग्राउंड वही बच्चे लेकिन उस दिन की प्रार्थना का जोश बच्चों के नये यूनिफॉर्म कुल मिलाकर एक पॉज़िटिव माहौल बना देते। अप्रैल महीने के आखिर में वार्षिकोत्सव होनेवाला रहता है तो कहीं हारमोनियम तो किसी कमरे में राजस्थानी तो किसी में गुजराती धुन पर नृत्य लहरियाँ सुनाई पड़ती थीं। जाने कितने बच्चे मनुहार करते मैडम हमें भी म्यूजिक मैडम से कह कर डांस में रखवा दीजिये। पिछले साल ही दो साड़ियाँ खरीदी थी संभालकर रख दिया था एनुअल फंक्शन में पहनने के लिये। तीन महीने पीछे जाना जैसे वर्षों से किए जा रहे किसी काम का एकबारगी छूट जाना। वैसे छूटता कुछ भी नहीं उसके तन्तु मस्तिष्क में कहीं - न - कहीं उलझे रहते हैं। ऑटो पकड़ स्कूल आने से शुरू होती थी दिन की शुरुआत।

"भईया अभी हाथ में दस का सिक्का है ले लो। बाकी हिसाब किताब बाद में करते रहना।"

ऑटो वाला हाथ में सिक्का लेकर - "जल्दी जाइए मैडम बस घंटी लगने ही वाली है।"

यह कहते - कहते रोज़ दिन की तरह ही प्रसन्ना मैडम अपने दोनों बैग लेकर लगभग भागते सीधे ऑफिस के बाहर रजिस्टर में अपनी उपस्थिति का प्रमाण अपने दस्तखत को दर्ज़ कर आगे बढ़ी।

साथ - ही - साथ सामने कोई शिक्षक साथी दिख रहा है उसे गुड मॉर्निंग अगर कोई बच्चा गुड मॉर्निंग बोल रहा है तो उसे गुड मॉर्निंग बेटा कहते हुए अपनी हल्की मुस्कान बिखेरते सीढ़ियों की तरफ बढ़ गईं। अभी दोनों बैग हाथ में ही साथ ही साथ दूसरे हाथ में बच्चों की अटेंडेंस रजिस्टर है। जल्दी - जल्दी सीढ़ियों को चढ़ते हुए जैसे ही ऊपर वाले तल्ले पर पहुँचती हैं वहाँ रोज़ की भाँति दोनों लड़कियाँ खड़ी हैं। मानो उन लड़कियों को मैम के कदमों की आहट का पता हो।

“मैम रजिस्टर दीजिए।”

क्लास रूम के तरफ से आवाज़ आई - “आज आप बहुत सुंदर लग रही हैं।”

“थैंक यू बच्चों। चलो - चलो ठीक है मैं एक मिनट में आ रही हूँ।”

रजिस्टर पकड़ा कर दोनों बैग लेकर अपने रोज़ के अड्डे बायो-लैब की तरफ चली गईं। इधर रोज़ रजिस्टर लेने वाली लड़कियों ने क्लास के सभी बच्चों को सचेत कर दिया। लैब में सामान रख प्रसन्ना मैडम बच्चों की उपस्थिति लेने पहुँचती हैं।

एक - एककर रोल नंबर से उपस्थिति बोलते - बोलते रोल नंबर ट्वेंटी टू -“ये आज भी नहीं आया।”

एक बच्चे की आवाज़ आई - “मैम परसों दिखा था।

“कहाँ?”

“जब हमलोग ऑटो से स्कूल आ रहे थे तो रास्ते में।”

“अच्छा”

दूसरे बच्चे ने कहा - “मैम वो स्कूल यूनिफॉर्म में ही था।”

“फिर स्कूल क्यों नहीं आया”

“मुझे नहीं मालूम।”

“ये लड़का न मुझे कहीं का नहीं छोड़ेगा,मुझे इसकी वजह से डांट पड़ने ही वाली है।“

“अच्छा चलो सब लाइन बनाओ तुम लोग ज़्यादा दिमाग मत लगाओ। मैं उसके घर फोन करूंगी।”

“दिशा तुम सीधा नहीं चल सकती।”

“और तुम सिद्धार्थ पैर घसीटकर क्यों चल रहे हो?”

“पता नहीं एकदम कोई मैनर ही नहीं है, जाने कहाँ- कहाँ से ये आते हैं।”

मैडम बच्चों के साथ ही अपने दमखम को दिखाते सबसे पहले असेंबली ग्राउंड में पहुँचती हैं।

फाइनल बेल लग चुकी है दूसरे क्लास के बच्चे भी कहीं सीधी कहीं तिरछी लाइन में ग्राउंड में पहुँच रहे हैं।

इस बीच मैडम चौकस होकर बच्चों के यूनिफॉर्म,शूज, नाखून चेक कर रही हैं।

“इशिका तुम्हारे नाखून इतने बड़े क्यों हैं?”

“सॉरी, मैं कल काट लूँगी।”

“और आदिल तुम्हारे शॉक्स बिना रबड़ लगाये नहीं हो सकते नया कब खरीदोगे?”

ड्रम के बीट पर एक - दो - एक करते बच्चे अपनी - अपनी पंक्तियाँ सीधी कर रहे हैं। कमांडर विद्यार्थी ने कमांड दे दिया प्रार्थना शुरू हो चुकी है।सारे शिक्षक भी प्रार्थना करने की निरर्थक कोशिश कर रहे हैं।

केन्द्रीय विद्यालय पलासदेव

प्रसन्ना मैडम अपनी कक्षा के बच्चों की पंक्तियों के बीच चलकदमी कर प्रार्थना की लाइनें धीरे-धीरे गुनगुना रही हैं। यहाँ बच्चों को गाने के लिये प्रेरित करने के साथ उनकी बंद आँखों में अपनी उपस्थिति दर्ज़ करना लक्ष्य है।

“दया कर दान विद्या का हमें परमात्मा देना।

दया करना हमारी आत्मा में शुद्धता देना।“

इन पंक्तियों की समाप्ति के साथ मौन प्रार्थना शुरू हो चुकी है। हज़ार बच्चों के बीच में ऐसी शांति अगर एक सुई भी गिर जाये तो पता चल जाये। प्राइमरी के छोटे बच्चे कभी एक आँख खोल रहे तो दूसरे को बंद करते देख फिर आँखें बंद कर ले रहे हैं।

तभी असेंबली ग्राउंड से सटे कॉरीडोर में किसी की ज़ोर - ज़ोर से आवाज़ आ सुनाई देने लगी।

“सिक्यूरिटी गार्ड को बुलाओं”

“इन्हें अभी क्यों आने दिया?”

इस आवाज़ को सुन असेम्बली थोड़ी देर के लिए सन्नाटे में आ गई। कमांडर बच्चे ने मौन प्रार्थना खत्म करने का कमांड दे दिया। बच्चों में खुसर - फुसर शुरू हो गई।

शिक्षक भी छुप छुपाकर मामले को समझने में लग गए।

शिक्षकों को प्रिंसिपल की आवाज़ समझ में आ गई थी लेकिन मामला ठीक से सामने नहीं आ रहा है।

सभा को विसर्जित कर दिया गया। कदम - कदम बढ़ाए जा ड्रम बीट के साथ सुनाई देने लगा। बच्चे अपनी - अपनी कक्षाओं की तरफ बढ़ने लगे। तभी स्कूल का चपरासी शिक्षकों की तरफ आता दिखा। सारे शिक्षक फिर खुसर - फुसर शुरू किए पता नहीं क्या हुआ होगा ?

“प्रसन्ना मैडम आपको साहब बुला रहे हैं!”

प्रसन्ना मैडम प्रिन्सिपल चेम्बर की तरफ बढ़ने लगीं तो एक - दो टीचरों ने ‘बेस्ट ऑफ लक’ विश भी कर दिया।

एक डर और अनजाने शंका के बीच में प्रसन्ना मैडम प्रिंसिपल के चैंबर में पहुंची। वहाँ अपने क्लास के बच्चे और एक अधेर उम्र के व्यक्ति को देख धक्क से लगा।

“मैडम ये आपकी क्लास का बच्चा है?”

“येस सर”

“कितने दिनों से स्कूल नहीं आ रहा?”

“यही कोई दस - बारह दिनों से।”

“आपने मुझे सूचना दी?”

“पेरेंट को फोन किया?”

“सर फोन लगाया था स्वीच ऑफ बता रहा था।”

बीच - बीच में बच्चों से पूछते रही हूँ।

प्रिंसिपल ने बच्चे को क्लास में भेज दिया। फिर उस अधेर व्यक्ति संभवत : उस रोल नंबर ट्वेंटी टू के गार्जियन हैं।

प्रिंसिपल ने कहा - “मैं स्कूल की समस्या स्कूल में निपटा लूँगा।”

“लेकिन अब आप ही बताइये आप बोल रहे कि आप उसके नाना हैं। घर में दूसरा कोई देखने वाला नहीं है आप यहाँ अकेले रहते हैं। पिछले दस दिनों से स्कूल नहीं आ रहा।“

“आपको नहीं पता!” घर से कहाँ जा रहा क्या कर रहा आपको पता ही नहीं? आप कहाँ काम करते हैं?”

“साहब मैं रेलवे का एक छोटा कर्मचारी हूँ यहीं वर्कशॉप में काम करता हूँ।“

“फिर बच्चे के लिए समय नहीं; एडमिशन हो गया आपकी जिम्मेदारी खत्म।“

“वो तो आज मुझे स्कूल आने में थोड़ी देर हो गई, मेरी नज़र इसके स्कूल यूनिफॉर्म पर पड़ गई।”

आपके नंबर पर कॉल करने पर फोन नहीं लगा फिर आपके पते पर सिक्यूरिटी गार्ड को भेजा। आपकी लापरवाही पर मुझे बहुत तेज गुस्सा आ रहा है। आप ऐसा कीजिये इसकी टीसी लेकर कहीं दूसरी जगह दाखिला करवा दीजिये।”

उस अधेड़ आदमी के साथ प्रसन्ना मैडम आसन्न खतरे को भांप काटो तो खून नहीं की स्थिति में चुपचाप खड़ी हैं।

रोल नंबर ट्वेंटी टू के गार्जियन भी प्रिंसिपल के विकराल रूप को देख अब चुप्पी को चुना।

थोड़ी देर बाद मौके की नजाकत को समझ प्रसन्ना मैडम ने कहा - “सर, सॉरी नेक्स्ट टाइम से ऐसा कुछ नहीं होगा।”

“क्या मैं पेरेंट के साथ बाहर जाकर बात कर सकती हूँ?”

“देखिये जाइए आखिर माजरा क्या है?”

“आप ही सोचिए हर काम अगर प्रिंसिपल ही देखेगा तो क्लास - टीचर और बाकी टीचरों का क्या काम?”

प्रिंसिपल से नज़र चुराती सॉरी सर कहकर मैडम बाहर आ गईं। साथ ही साथ रॉल नंबर ट्वेंटी टू यानि आदित्य के नानाजी भी बाहर कॉरिडोर में आ गये।

“मैं शाम में कॉल करूंगी आप आदित्य की मम्मी से बात करा देंगे।”

“जी मैडम! आपको नहीं पता आदित्य की मम्मी इस दुनिया में नहीं हैं। उसके पापा ने दूसरी शादी कर ली अब वो मेरे पास ही रहता है। मैं परेशान हूँ गाँव में पढ़ने की सुविधा थी नहीं तो यहीं ले आया। अब समझ में आ रहा लड़का हो या लड़की उसको पालना बहुत मुश्किल है। और तो और ड्यूटी और बच्चे की पढ़ाई को संभालना इतना भी आसान नहीं।”

एक क्षण को प्रसन्ना मैडम बिल्कुल थम सी गईं।

“दरअसल इस स्कूल में आए मुझे ज्यादा दिन नहीं हुए हैं। और पेरेंट मीटिंग में भी किसी से मुलाक़ात नहीं हुई थी इस कारण सारी बात मुझे नहीं पता।”

प्रसन्ना मैडम थोड़ी देर चुप रहीं फिर बोलीं -“एक काम करेंगे कल से आदित्य मेरे ऑटो में स्कूल आयेगा। वो स्कूल आ रहा है कि यह पता चल जायेगा और आपकी यह समस्या दूर हो जायेगी।”

एक अप्रत्याशित प्रस्ताव जिसे सुनकर आदित्य के नानाजी हाथ जोड़ने लगे।

“अरे! आप यह क्या कर रहे हैं? यह सब मुझे सेशन के लगभग आखिर में पता चला

नहीं तो मैं इसे शुरू से देखती। चलिए कोई नहीं; आप निश्चिंत रहें!"

एक आश्वस्ति की अनुभूति के साथ आदित्य के नाना जी ने विदा ली।

दूसरी घंटी लग चुकी है; मैडम जल्दी - जल्दी अपनी कक्षा में जा रही है। उनके दिमाग में एक उथल - पुथल है कि आखिर यह बच्चा कहाँ रुक जाता था? पहले भी वह कक्षाओं में अनुपस्थित रहा है। उसका उसके विषय का होम वर्क भी कभी पूरा नहीं रहता था। इतने बच्चों का सब कुछ कैसे पता रखूँ के चक्कर में बच्चों के एनेकडोटल रिपोर्ट भी पूरे नहीं थे। बच्चों का इतिहास,भूगोल जानना इतना भी आसान नहीं इन्हें तो क्षणों में बदला जा सकता है।

अपने साफ और तेज काम की वजह से चर्चित प्रसन्ना मैडम को अपने-आप पर गुस्सा भी आ रहा है। आख़िर वो भी तो अपनी कक्षा के सभी बच्चों को ठीक से जान सकती है। मन में एक बोझ के साथ संतोष भी था कि चलो! कम-से-कम वो बच्चा ऑटो में साथ आयेगा।

स्टाफ रूम में तरह-तरह की चर्चा और एक नई चुनौती के बीच मैडम ने आज का दिन पूरा किया।

दूसरे दिन ऑटोवाले को इंतज़ार नहीं करना पड़ा। मैडम ने ऑटोवाले को कहा - "भैया आप ही तो रोज़ मुझे लाते हो क्यों न महीने में एक दिन किराया लिया करो और सुनो वो रोड नंबर छः में भी रोज़ चलना है; वहाँ से एक बच्चा मेरे साथ स्कूल जायेगा।"

ऑटोवाले ने महीने की कुछ बढ़ी हुई रकम की मांग की और रोज़ आने को तैयार हो गया। मैडम ने आदित्य के नानाजी को फोन कर दिया आप आदित्य को घर के बाहर लेकर खड़े रहें मैं आ रही हूँ।

आदित्य और ऑटो में साथ हैं। रॉल नंबर ट्वेंटी टू क्लास का बदमाश बच्चा मैडम की उपस्थिति से डरा - सहमा एक अच्छे बच्चे की तरह चुपचाप बैठा हुआ है।

मैडम ने बात शुरू की - "तुम कितने बजे उठते हो?"

"यही कोई छः बजे"।

"टिफिन लिये हो?"

"हाँ बिस्किट लाया हूँ। आज नाना जी को लेट हो गया।"

थोड़ा - बहुत बात करते दोनों स्कूल पहुँच गये। रोज़ भाग-भागकर स्कूल जानेवाली मैडम आज समय से दस मिनट पहले हैं।

सीढ़ियों के पास मैडम का इंतज़ार करती लड़कियाँ वहीं हैं। अटेंडेंस के समय रॉल नंबर ट्वेंटी टू की उपस्थिति ने प्रसन्ना मैडम को कहीं से पूरा कर रखा है। आज अपने क्लास के पूरे चालीस बच्चों के आने से उनकी खुशी बाहर से भी देखी जा सकती है। दिन-भर कभी ऊपर तो कभी नीचे की कक्षाओं में भागते - भागते आज का दिन लगभग बीतने ही वाला है।

सातवीं घंटी लग चुकी है प्रसन्ना मैडम अपनी नई क्लास में जाने ही वाली है। अचानक उनकी क्लास का एक बच्चा दौड़ते हुए उनके पास पहुंचा - "मैम-मैम आदित्य

के पास मोबाईल है अभी वाशरूम में किसी से बात कर रहा था।"

मैडम थोड़े गुस्से में और थोड़ी सशंकित होकर बोली - "तुम जाओ मैं देखती हूँ और ये बात किसी दूसरे बच्चे या टीचर से नहीं करना।"

मैडम का दिमाग फिर तरह - तरह की बातों को सोचने लगा। इस आठवीं के बच्चे के पास मोबाईल कहाँ से आया? क्या उसके नानाजी इस बात को जानते हैं? इस उम्र के बच्चे माँ की सख़्त जरूरत होती है... आदि, आदि। मैडम मन - ही - मन प्रार्थना करने लगी कि यह बात प्रिंसिपल तक न जाये नहीं तो इस रॉल नंबर ट्वेंटी टू के कारण मेमो जरूर मिलेगा। कैसे भी आखिरी पीरियड बीत जाए बाकी तो ऑटो में संभाल लूँगी।

सातवीं और आठवीं घंटी दोनों के समय आज प्रसन्ना मैडम बच्चों से बहुत ही बेरुखी से बात की। आज अपनी चहेती दोनों बच्चियों को भी बिना मतलब डांट दिया।

फ़िलहाल अब छुट्टी हो चुकी है। बाहर ऑटो वाला और आदित्य दोनों इंतज़ार कर रहे हैं। मैडम अपने गुस्से को जाहिर नहीं होने दी बड़े ही प्यार से कहा - "अरे! आदित्य तुम्हें इंतज़ार करना पड़ा आज रजिस्टर को चपरासी ने थोड़ा लेट बाहर निकाला इस कारण सिग्नेचर करने में देरी हो गई।"

"कैसा रहा तुम्हारा आज का दिन?"

आदित्य ने सकुचाते हुए कहा -"मैडम ठीक ही रहा।"

ऑटो चल चुकी है।

"और बताओ तुम्हें पढ़ना कैसा लगता है?"

"मैडम मुझे पढ़ना ठीक लगता है लेकिन स्कूल आना पसंद नहीं।"

ऐसा क्यों? क्लास में तुम्हारा कोई दोस्त नहीं है क्या?

"मैडम मैंने इस स्कूल में लेट एड्मिशन लिया यहाँ मेरा कोई पक्का दोस्त नहीं है। सब मेरी चुगली करते रहते हैं।"

"किस बात की?"

"कभी दोस्तों से लड़ाई की बात तो कभी कॉपी - किताब चोरी का इल्जाम।"

"मैडम अभी आप यहाँ नई हैं इस कारण उतनी शिकायतें नहीं करते होंगे।"

"नाना जी भी मेरी शिकायतों से आजीज होकर कई बार नाम कटवाने बोलते हैं।"

मैडम ने बड़े ही प्यार से कहा- "अच्छा! तुम ख़ुद ही बताओ आज तुमने कुछ गलत काम किया है।"

आदित्य ने थोड़ा सोचते हुए कहा - नहीं तो।

"आदित्य तुम जरा अपना बैग देना।"

आदित्य थोड़ा सहमा लेकिन बैग मैडम को थमा दिया। जब मैडम ने बैग में इधर - उधर ढूँढना शुरू किया तब आदित्य के चेहरे की रेखाएँ स्पष्ट रूप से दिख रहीं हैं। लेकिन वो डरा हुआ नही दिख रहा है। एक ढीठ की तरह आदित्य मैडम को देख रहा है।

मैडम ने बैग से एक स्मार्ट फोन निकाला।

"ये क्या है?"

"फोन"

"ये तुम्हारे पास क्यों है? तुम्हें पता नहीं स्कूल फोन लाना मना है। मैं तुम्हारे नाना

जी को फोन करूँ? अब तुम्हें टीसी दिलवाने में ही भलाई है। तुम अपने साथ जाने कितने बच्चों को बर्बाद करोगे।सही - सही बताओ।"

"मैडम ये मेरा फोन नहीं है ये मेरे दोस्त का है। स्कूल में बाकी बच्चे भी तो फोन लाते हैं। बाकी बच्चे मेरे ऊपर धौंस दिखाते थे। इस कारण मैं दोस्त का फोन स्कूल लाया। हमलोग बस गेम खेलते हैं। मेरे नानाजी के पास स्मार्ट फोन नहीं है।"

उस बच्चे में कुछ तो है जो उसकी गलतियों के बाद भी मैडम को डांटने से रोक देता है। मैडम उस बदमाश बच्चे के मासूमियत में फंस जाती हैं या मैडम का बच्चों से लगाव। अभी भी यही हुआ। मैडम ने उसकी कहानी पर भरोसा किया। फिर समझाया स्कूल छोडकर तुमलोग गेम खेलने जाते हो यह अच्छा नहीं है । तुम क्लास में जवाब तो ठीक देते हो। मुझे तुम्हारे नानाजी पर दया आती है तुम्हारा कितना ख़्याल रखते हैं। तुम्हारा भी तो कुछ फर्ज बनता है।

मैडम की बातों को सुन सहमा सा बैठा आदित्य बोला मैम एक बार माफ कर दीजिए- "आप नानाजी को मत बताना।"

"अब तुम यह मोबाईल अपने दोस्त को लौटा देना आइंदा ऐसी गलती मत करना।"

मैडम को भरोसा है आदित्य कहीं - न - कहीं मुझसे जुड़ गया है। कुछ भी गलत करने के पहले रोज़ ऑटो मे आते - जाते समझाई गई बातों पर ध्यान देगा।

एक अनदेखे और अनजाने समझौते के तहत आदित्य में परिवर्तन दिखने लगा। रोज़ स्कूल आना सारे काम समय पर करना, इधर कुछ दिनों से असेंबली प्रोग्राम में भाग लेना।

मैडम के साथ ऑटो में आने के कारण बच्चे आदित्य को जानने लगें हैं। आजकल जाने-अनजाने में आदित्य भी अपनी धौंस जमा देता है। प्रसन्ना मैडम को यह भीतर से एक ख़ुशी भी देता है दूसरी तरफ यह अंदेशा बना रहता है कि उनकी निष्पक्षता पर कोई बट्टा न लगे। उन्हें मालूम है जोश-जोश में इस तलवार की धार पर चलना शुरू तो कर दिया पता नहीं आगे क्या होगा?

आज कितना बुरा लगा जब स्टाफ रूम में सोमा मैडम ने सबके सामने बोला कि- "आज आपका चहेता होम -वर्क बनाकर नहीं आया था। पूछने पर उसके पास हज़ार बहाने हैं।"

आज घर जाते समय उसे समझाऊँगी यही कहकर प्रसन्ना मैडम ने उस दाग को धोना चाहा। ऑटो से लौटते वक्त फिर आदित्य को नसीहतें मिली। आदित्य के जीवन का जो कोना खाली था उसे प्रसन्ना मैडम उसे सुधारने के नाम पर भर रहीं हैं। कभी उसके लिए अलग से टिफ़िन लाना तो कभी उससे पूरे क्लास की बातें करना। वह खुलते - खुलते इतना खुल गया कि उसे दस मिनट का ऑटो का सफर अच्छा लगने लगा। मैडम के कामों में जाने या अनजाने में आदित्य कहीं-न-कहीं शामिल हो गया है।

प्रसन्ना मैडम ने भी स्कूल में मोबाईल पकड़ने का जैसे एक अभियान ही शुरू कर दिया। कुछ शिक्षकों के साथ मिलकर प्रार्थना

केन्द्रीय विद्यालय परिवार

के समय बैग चेक तो बच्चों की जूता चेकिंग में कुछ मोबाईल पकड़े। बच्चों में अब दहशत का माहौल रहता है। आदित्य ने बताया मैडम अब बच्चे मोबाइल नहीं लाते।

प्रसन्ना मैडम वैसे भी अपने काम के बल पर सभी की चहेती है। इधर प्रिन्सिपल ने कुछ विशेष जिम्मेदारियाँ भी थमा दी है।

बच्चों की वार्षिक परीक्षायें होने वाली हैं। आदित्य ने अपनी सभी अनचाही हरकतों पर विराम लगा दिया है।

बच्चों की परीक्षाएँ समाप्त हो गईं हैं। स्कूल में आजकल सारे शिक्षक कॉपी मूल्यांकन और रिजल्ट बनाने में लगे हुए हैं। रिजल्ट लगभग पूरे हुए कि एक दिन अचानक शहर के साथ स्कूल भी बंद हो गया।

बच्चों की तो परीक्षा खत्म होने के बाद की छुट्टियाँ चल रहीं हैं। मार्च के आखिर में बच्चे अपने माता - पिता के साथ रिजल्ट लेने आते हैं। अबकी बार वैबसाइट पर परिणाम निकाल दिये गए। आदित्य ने लगभग सभी विषयों में अच्छे नंबर पाये हैं। सत्र के शुरुआत की घोषणा हो चुकी है। अब शिक्षकों को तकनीकी रूप से दक्ष होना है।

एक ज्ञात रोग के अज्ञात भय जिसमें एक - दूसरे को संक्रमित होने और करने की संभावनाएं हैं इस कारण बच्चे स्कूल नहीं आ सकते। रोज की कक्षाओं की जगह ऑनलाइन क्लासों ने ले ली है। प्रसन्ना मैडम की दिनचर्या बदल चुकी है। अब भागभाग कर स्कूल नहीं जाना है। मैडम की कक्षा के बच्चे अगली कक्षा में प्रोमोट हो चुके हैं। प्रसन्ना मैडम को एक नई क्लास की क्लास टीचर बना दिया गया है। हालांकि वो अपना विषय अपने प्रमोटेड बच्चों को भी पढ़ा रही हैं। सत्र की शुरुआत में हर वर्ष की तरह बच्चों ने कक्षा के लिए कॉपियों और किताबों का इंतज़ाम कर लिया है। कभी उत्साहित बच्चे ऑनलाइन क्लास का इंतज़ार करते हैं। शुरू में कम बच्चे क्लास करने आते फिर धीरे - धीरे बच्चों की संख्या बढने लगी। इधर संक्रमण के खतरों को देखते हुए स्कूल खुलने की कोई संभावना नहीं दिखती है। लगभग सारे शिक्षकों ने इस तकनीक को आत्मसात कर लिया। शतप्रतिशत ना सही स्कूल ना छूटे बच्चे पढ़ना ना भूले के लक्ष्य की ओर शिक्षक और बच्चे बढ़ने लगे हैं।

अब कक्षाओं के निरीक्षण और परीक्षण के कारण अत्यधिक सतर्कता बरती जाने लगी है। प्राचार्य ने शिक्षकों को आदेश दे दिया है कि हर बच्चे को कक्षाओं में लाया जाये। शिक्षकों ने फोन से बच्चों से कहकर अपनी कक्षा में उपस्थिति बढ़ाने का अभियान शुरू कर दिया है। सिर्फ़ बच्चों के नाम के अक्षरों में बच्चों की उपस्थिति का अहसास करती प्रसन्ना मैडम अब बच्चों को अपना विडियो ऑन करने बोलने लगी हैं। चहकते बच्चों से चालीस मिनट में एक आध मिनट बात करती हैं तो वो मायूस हैं। अब बच्चे होमवर्क भी जमा करने लगे हैं। बच्चे अपने स्मार्ट फोन से फोटो खींच होम वर्क भेज रहे हैं।

अपने विषय की कक्षा में आदित्य यानि रोल नंबर ट्वेंटी टू की तलाश पूरी नहीं हो पा

केन्द्रीय विद्यालय परिवार

रही है। बच्चों के विडियो ऑन करवाने के उदेश्य के पीछे आदित्य को देखना भी एक लक्ष्य है। मैडम ने फोन लगाना चाहा उसके नानाजी का फोन पहुँच से बाहर बताता है। दूसरे नंबर से भी फोन करना चाहा बात नहीं हो पा रही है। प्रसन्ना मैडम अपने ऑटो के सफ़र के साथ आदित्य को याद कर परेशान रहने लगी हैं। मैडम ने दूसरे बच्चों से जानना चाहा आदित्य कहाँ है?

किसी ने बताया उसके नानाजी अपने गाँव गये हैं इस कारण उससे बात नहीं हो पा रही है। कक्षाएं चलने लगी महीने का सिलेबस पूरा होने लगा सत्तर प्रतिशत से ज्यादा बच्चों की उपस्थिति रहने लगी। प्रसन्ना मैडम अपने इस आभासी कक्षा में बच्चों की अनुभूतियों को महसूस करने लगीं। बच्चे अपने दोस्तों को एक - दो मिनट के लिए सुनकर अपनी दुनिया में खोने लगे हैं। आज मैडम के व्हाट्सप्प पर एक अनजाने नंबर से क्लासवर्क के कुछ फोटो आए। मैडम ने चेक कर वापस कर दिया। हालांकि गृह - कार्य जमा करने की यह जगह नहीं है। फिर दूसरे दिन भी पीछे के पाठों के गृह कार्य के फोटो आये ।

आज मैडम गुस्से में है ये बच्चे समझते क्यों नहीं?

“मना कर रखा है फिर भी यहाँ होम वर्क क्यों जमा करते हैं? मोबाईल में स्पेस नहीं रहेगा फिर दूसरे काम कैसे करूंगी? अभी बताती हूँ! इस नंबर वाले बच्चे को।”

मैडम ने मैसेज किया “हू र यू”?

“आई एम आदित्य”

मैडम ने झट फोन लगाया - “तुम कहाँ हो? तुम्हारा फोन नंबर बदल गया क्या? ऑनलाइन क्लास क्यों नहीं कर रहे हो?”

“मैडम मैं नानाजी के साथ गाँव गया था। गाँव जाते समय नानाजी का फोन कहीं गिर गया और अभी नानाजी के पास उतने पैसे नहीं कि स्मार्ट फोन खरीदा जा सके। मैं एक पुराने फोन से आपके विषय का फोटो खींच भेजता हूँ यहाँ व्हाट्सप्प चल जाता है बाकी कुछ नहीं।”

प्रसन्ना मैडम ने थूक घोंटते हुए ठीक है बेटा मैं देखती हूँ ? मैडम की आँखों के सामने बिन फोन वाले दीपक, खुशी, आकृति सभी के चेहरे घूमने लगे।

एक दिन प्रिन्सिपल के आदेश आया सभी शिक्षकों को कल विद्यालय आना है। सारे

शिक्षकों के साथ मैडम स्कूल की दीवारों के इर्द - गिर्द रॉल नंबर ट्वेंटी टू के साथ दूसरे बच्चों को ढूंढ रही हैं। बरामदे में पैर घसीटते बच्चों के जूत्तों की आवाज़ कानों में बज रहे हैं ।मीटिंग में प्रिन्सिपल ने हर एक शिक्षक से उनकी ऑनलाइन क्लास में उपस्थित और

अनुपस्थित छात्रों का ब्योरा लिया। मीटिंग समाप्त हो चुकी है। प्रिन्सिपल अपने चैंबर में जा चुके हैं।

अनीता मैडम ने लगभग डांटते हुए कहा - “क्यों? प्रसन्ना तुम्हें तो बड़ी चिंता हो रही है। प्रोफेशनल बनो ज़्यादा इमोशनल बनोगी तो ख़ुद के साथ हमें भी डांट खिलवाओगी।

जी मैडम! आइंदा से ख़्याल रखूंगी।

प्रसन्ना मैडम की आवाज़ में आदित्य जैसे बच्चों की बेआवाज भावनाएं कहीं दम तोड़ती हुई नज़र आ रही है। फिर कल से ऑनलाइन क्लाससेस का नया टाईम-टेबल मिल चुका है।

प्रसन्ना मैडम सूनी सड़क पर भी थरथराते हाथों से ड्राइव कर घर पहुँचने वाली हैं।

.....

जैसी करनी वैसी भरनी

-अभिषेक कुमार नौंवी 'ब'

एक जंगल में एक शेर और उसकी प्रजा रहती थी शेर काफी बूढ़ा हो चुका था जिससे शिकार नहीं कर पाता था और एक दिन जब शेर जंगल में शिकार करने निकला तो तभी कुछ शिकारियों ने उसे देख लिया क्योंकि हम लोग जानते हैं कि शेर बूढ़ा होने के कारण वह तेज दौड़ ना पाया और शिकारियों ने अपनी बंदूक से गोली मार दी पर गोली शेर के पैर पर जा लगी और किसी तरह से बच निकला फिर शेर बूढ़ा था और उसके पैर में गोली लगी थी तो वह शिकार नहीं कर पाता था और वे दिन पर दिन भूख से मरा जा रहा था यह देख एक लोमड़ी के मन में एक विचार आया कि यदि में शेर को अपना दोस्त बना लो तो वह मुझे नहीं खाएगा लोमड़ी ने शेर के पास जाकर कहा कि शेर तुम तो अब शिकार नहीं कर सकते अगर तुम मुझे नहीं खाओगे तो मैं तुम्हें एक रोजाना शिकार ला दिया करूंगा यह बोलते हीे शेर के मन मैं एक विचार आया कि मुझे शिकार पर जाना भी नहीं होगा और मुझे खाना मिल जाएगा शेर ने कहा ठीक है मैं तुम्हें नहीं खाऊंगा तो लोमड़ी ने रोजाना शेर के लिए शिकार ला दिया करता था यह देख खरगोश ने सोचा कि हर एक जानवर जंगल से गायब होता जा रहा है वह जानता थी कि यह काम लोमड़ी का हो सकता है यह बात सभी जानवरों को बता दी और फिर सभी जानवरों ने एक विचारा आया कि क्यों ना लोमड़ी को शेर का शिकार ही बना दिया जाए सभी जानवर मिलके शेर के पास गए और कहां की आप शिकार नही कर सकते और लोग जानते हैं कि आपके पैर पर गोली लगी है और अब बूढ़े भी हो चुके हैं इसलिए आप शिकार नहीं कर पाते इसलिए हम लोगों में से एक जानवर आपके लिए खाना बन कर आएगा शेर ने मन में ही सोचा की मेरी प्रजा कितनी अच्छी है और फिर एक जानवर ने बोला कि आपकी पैर में जो गोली लगी है उसका इलाज भी है शेर ने बोला इलाज क्या है जानवर ने बोला कि अगर आप एक लोमड़ी का ताजा मांस खाते हैं तो आपका पैर ठीक हो सकता है शेर ने बोला ठीक है और फिर जब लोमड़ी ने शेर का खाना लाया तो शेर खाना छोड़ कर के लोमड़ी पर टूट पड़ा और लोमड़ी मर गया फिर सब जानवर खुशी-खुशी अपना जीवन बिता रहे हैं।

.....

रामानुजन के लिए एक जुनून था गणित

-कुमारी निशा बडाईक नवी ब

जन्म : 22 दिसंबर 1887

निधन : 26 अप्रैल 1920

क्षेत्र : गणित

एक समीकरण का मेरे लिए तक कोई मतलब नही है

जब तक यह ईश्वर के विचार को व्यक्त न करता हो

श्रीनिवास रामानुजन मे बचपन से ही गणित के प्रति झुकाव था। स्कूल शिक्षा भी पूरी ना कर पाने के बाबजूद वे दुनिया के महानतम गणित मे शामिल हो गेए । इसकी एक ही वजह थी ; गणित के प्रति उनका झुकाव । हाईस्कूल तक रामानुजन सभी विषयो मे अच्छ थे । पर गणित उनके लिए एक स्पेशल प्रोजेक्ट की तरह था जो धीरे धीरे जूनून बन गया । सामान्य से दिखने वाले इस स्टूडेंट को दूसरे विषयो कि क्लास बोरिंग लगती थी बचपन मे ।

रामानुजन को अटपटे सवाल पूछने की आदत थी।जैसे विशव का पहला पुरुष कौन था? पृथ्वी और बादलो के.बीच की दूरी कितनी होती है? उनके मन मे जिज्ञासा बहुत थी। दसवी तक स्कूल मे अच्छा पराफ्रॉम करने की वजह से उनेह स्कॉलरशिप तो मिली ,लेकिन अगले ही साल उसे वापस ले लिया गया । कारण यह था कि गणित के अलावा वे बाकी सभी विषयों कि पढाई रूक गयी थी । उसके बाद वे रात भर जाग कर गणित के नये-नये सुत्र तैयार करते । शोधों को स्लेट पर लिखते थे । रात को स्लेट पर चॉक घिसने कि आवाज के कारण परिवार के अन्य सदस्यो को सोने मे भी परेशानी होती थी । इसके बावजूद भी वे अपने इस काम मे लगे रहे और रात-रात भर जागकर वे इसी तरह से गणित का अभ्यास करते । इसे दौरान वे इंडियन मैथेमेटिकल सोसाइटी के गणित के संपर्क मे आए और एक गणितज्ञ के रूप मे उन्हे पहचान मिलने लगी । ज्यादातर गणितज्ञ जीएच हार्डी ने जैसे ही रामानुजन के कार्य को देख वे तुरंत उनकी प्रतिज्ञा पहचान गये । यही से रामानुजन के जीवन मे एक नऐ अध्याय कि शुरूआत हुई । हार्डी ने उस समय के विभिन्न प्रतिभाशाली व्यक्ति को 100 के पैमाने पर आंक था । अधिकांश गणितज्ञ को उन्होने रामानुजन को

कैंबिर्ज आने के लिए आमंत्रित किया प्रॉफेसर हार्डी के प्रयासो से रामानुजन को केब्रिज जाने के लिए आर्थिक सहयात भी मिल गयी । अपने विशेष शोध के कारण उन्हें केब्रिज विश्वविद्यालय द्वार बी ऐ की उपाधि भी मिली । रामानुजन ने उच्च गणित के क्षेत्र जैसे संख्या ,सिद्धांत इलिपटक फलन ,।

.....

मन की शक्ति

-पूर्णिमा कुमारी नौंवी 'ब'

मनुष्यों को आदिकाल से ही समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ माना गया है | श्रेष्ठता का कारण सर्वविदित है , क्योंकि मनुष्य के अंदर सोचने - विचारने चिंतन -मनन करने की अभूतपूर्व ईश्वरीय विद्यमान है| जीवन में मनुष्य हर चीज का बारीकी से अनुभव करता है जैसे - सुख-दुख , जय - पराजय हर्ष - उल्लास आदि| ये सभी मन की शक्ति से तो उत्पन्न होते हैं| मनुष्य एक चिंतनशील प्राणी है| मनुष्य को सोचने और समझने की प्रक्रिया मन से ही प्राप्त होती है|मनुष्य को

संकल्प - विकल्प करने की शक्ति का ही मन है | मन : शक्ति अपार है | हम लोग उसकी गति को , हवा से भी नहीं माप सकते | तभी तो यश ने युधिष्ठिर से प्रश्न किया था कि - हवा से भी तीव्र गति वाला कौन है? तो युधिष्ठिर ने कहा - मन की गति| मन मजबूत होने पर शरीर में ताकत और उत्साह पैदा होती है|

लेकिन जब मन दुर्बल होता है तो मन की शक्ति निष्क्रिय हो जाती है| इस अवस्था में मनुष्यों को समझ में नहीं आता कि हम किस कार्य को करें और किसको ना भू करें| द्वंद्वात्मक विचार मनुष्य के मन में उठने लगते हैं| फलस्वरूप मनुष्य के मन की शक्ति ठीक से काम नहीं कर पाता | यह जो संसार है

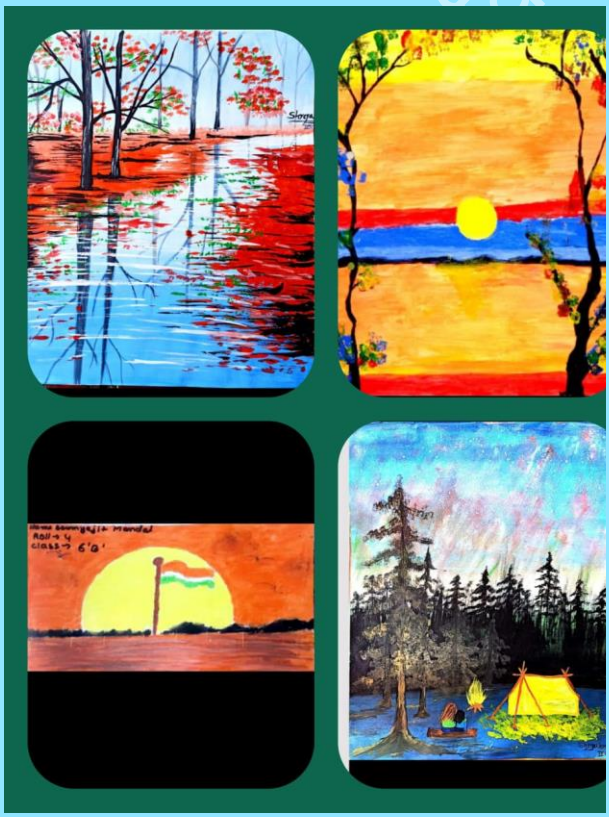

माँ

-उज्ज्वल भारती सातवीं 'अ'

दुनिया का सबसे खुबसूरत शब्द है माँ। इस शब्द में ममता की कितनी गहराई छिपी है, इसका एहसास बोलने और सुनने पर होता है। माँ के लिये अपने बच्चों से बढ़कर कुछ भी नहीं होता। माँ ममता, प्यार, दुलार, करुणा और त्याग की देवी है। बिना किसी स्वार्थ के प्यार सिर्फ माँ ही कर सकती है। सारा जीवन दूसरों के लिये जीनेवाली माँ, मुझे तुम पर गर्व है। माँ भगवान से अपने लिये कुछ नहीं माँगती, जब भी दुआ के लिये हाथ उठाती है तो हमारा ही जिक्र होता है। आज भी जब माँ की गोद में सर रखकर सोता हुँ तो बहुत सूकून मिलता है। जब माँ सर पर हाथ फेरती है तो एसा लगता है की सारे जहाँ की खुशी मिल गई। माँ की ममता हमें जिन्दगी सुख से जीने का एहसास दिलाती है। यदि मुझसे कोई पूछे की 'क्या तुमने इश्वर देखा है?' तो मैं कहूंगा 'हाँ' देखा है'। प्रतिदिन घर में सबसे पहले उठकर बिना थके, बिना रुके घर का काम करते हुए देखा है।

माँ में एक प्यारा सा ईश्वर है। बलिदान की मूरत माँ तुझे सहस्र नमन।

उदयाचल पत्रिका

पुस्तक समीक्षा

- मनोरंजन कुमार
टीजीटी हिन्दी, केवी पतरातू

Akhil Ranjan सर से Man's Search For Meaning पुस्तक पढ़ने की प्रेरणा मिली। यह एक बेहतरीन पुस्तक है, जो जीवन जीने के लिए प्रेरणा के साथ - साथ हौसला देती है।

पुस्तक के लेखक हैं, Viktor Frankl वे एक होलोकास्ट से बचने वाले लेखक हैं। द्वितीय विश्व में जब नाज़ियों द्वारा ऑस्ट्रिया पर कब्जा कर लिया गया तो यहूदियों को Auschwitz Concentration camp (यातना गृह) में विक्टर फ्रैंकल के पूरे परिवार को डाल दिया गया। इन यातना गृह में उनके माता -पिता और भाई की मौत हो जाती है।

हिटलर ने शुरूआत में ही ऑस्ट्रिया पर जब कब्जा किया तो विक्टर फ्रैंकल के पास अमेरिकी वीजा था। इससे उनके माता - पिता बहुत खुश भी थे। लेकिन जब एक फ़टे पन्ने पर लिखे अर्थ को उन्होंने जाना तो वे अपने माता पिता के साथ ही रहना तय करते हैं और अमेरिकी वीजा को लैप्स होने देते हैं। उस पन्ने में लिखे का अर्थ था, “Honor thy father and thy mother that thy days may be long upon the land.”

विक्टर फ्रैंकल इस किताब के माध्यम से बताते हैं, जिंदगी का आखिरी क्या अर्थ होना चाहिए। वे इस किताब में फ्रेडरिक निचे के दो कोट्स से बहुत ज्यादा इंस्पायर्ड होते हैं और ये इनके ज़िंदा रहने में अहम भूमिका निभाते हैं।

पहला

“He who has a Why to live for can bear almost any How.” ("जिस किसी

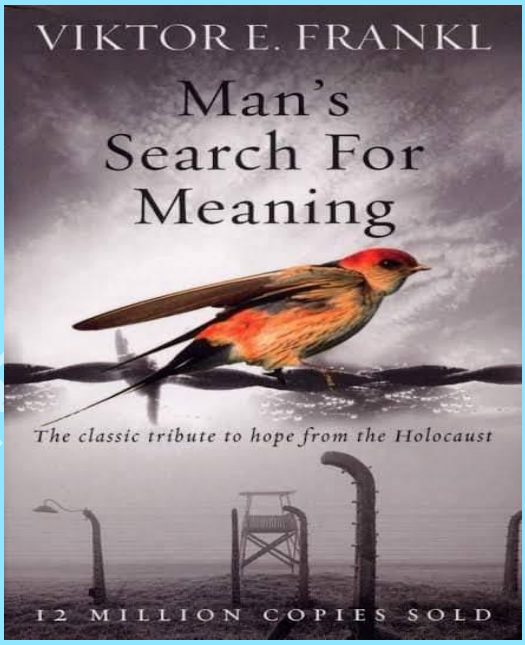

के पास भी जीने का मकसद है, वो कैसे भी करके जीवित रहेगा")

दूसरा

“That which does not kill me, makes me stronger." (जो कुछ भी मुझे ख़त्म नहीं कर पाता है, वो मुझे और भी मजबूत बनाता है")

विकट फ्रैंकल के सामने विकट समस्या थी, 28 में से मात्र एक बार उनके बचने की संभावना थी। वो भी स्टैट्स के अनुसार। उन्हें टॉर्चर सेल में डाल दिया गया। जहाँ उन्हें बुरी तरीके से शारीरिक और मानसिक

रूप से टॉर्चर किया जाता था। भूखे रहना पड़ता था, उनके पिता की मौत भूख और निमोनिया से हो गई। भयानक ठंड में वे कई लोगों के साथ वे कंबल साझा करते। टायफस बुखार का खतरा से कई लोग उनके सामने गुजर गए अलग। विक्टर को भी टायफस हुआ। लेकिन तमाम विकट परिस्थिति के बावजूद ज़िंदा रहे।

विक्टर कहते हैं, उनका विश्वास था जिस किसी के पास भी जीने का एक WHY है वो ज़िंदा रहेगा। उनके पास एक व्हाई यह था कि वे एक किताब पब्लिश कराना चाहते थे। एक मैनुस्क्रिप्ट (पांडुलिपि) नष्ट होने के बावजूद वे अपना किताब को दुनिया को सामने रखना चाहते थे। वे अपना अनुभव दुनिया से साझा करना चाहते थे और इसी एक व्हाई और उम्मीद ने उन्हें ज़िंदा रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे मानते हैं किसी भी समस्या को हम किस तरीके से डील करते हैं ये बेहद महत्वपूर्ण है। वे मानते हैं हमसे हर एक चीज छीना जा सकता है लेकिन हमारे प्रतिक्रिया करने के तरीके की आज़ादी को नहीं छीना जाए सकता है। ("Everything can be taken from a man but one thing: the last of the human freedoms–to choose one's attitude in any given set of circumstances, to choose one's own way.")

विक्टर इसी को लेकर एक कैदी का जिक्र करते हैं कि एक बार एक कैदी को स्वप्न आया को वो मार्च 30 को वो रिहा हो जाएंगे। लेकिन युद्ध बढ़ता ही गया और आज़ादी की संभावना कम हो गई। 29 को वह बीमार पड़ा, 30 को चेतनाशून्य हो गया है और 31 मार्च को उसकी मौत हो गई।

विक्टर इसे एक और उदाहरण से समझाते हैं कि क्रिसमस और नए साल के बीच मौतों की संख्या बढ़ जाती थी क्योंकि उन्हें लगता था कि वे इन दौरान रिहा हो जाएंगे लेकिन जब ऐसा नहीं होता था तो वे नाउम्मीदी के कारण मर जाते थे। इसी को ध्यान में रखते हुए विक्टर ने जो एक पंक्ति लिखी थी उसे मैं कोट कर रहा हूँ,

"Some men lost all hope, but it was the incorrigible optimists who were the most irritating companions."

विक्टर फ्रैंकल हिटलर की हार के बाद उस यातना गृह से आज़ाद होते हैं। और वे लोगों को एक साइकटिस्ट के तौर पर सलाह देते हैं। जहाँ का अनुभव भी वे इस किताब में साझा करते हैं। एक वाकये का वो जिक्र करते हैं:

"मेरे पास एक जनरल प्रैक्टिसनर आए, जो डिप्रेशन से गुजर रहे थे क्योंकि उनकी पत्नी गुजर गई थी। पत्नी को मरे हुए दो साल हो गए थे किंतु वे इस सदमा से बाहर नहीं आ पा रहे थे। उन्होंने मुझसे सलाह लेने के पूछा डॉक्टर मैं क्या करूँ? मैंने स्वयं को रोकते हुए जवाब देने के बजाय प्रश्न पूछा,"डॉक्टर क्या होता अगर आप मर गए होते और आपकी पत्नी ज़िंदा होती तो?

उसने कहा, "ओह,यह उसके लिए भयानक होता और किसी त्रासदी की तरह होता।"
मैंने कहा,"डॉक्टर,देखा ! इस तरह आपने अपनी पत्नी को उस पीड़ा से बचा लिया जो आपको हो रही है। वो इस तरह की पीड़ा से बच गई। और वो आप हैं जिसे ये दुःख भोगना पड़ रहा है।"
वे उठे और उन्होंने मुझसे हाथ मिलाया और शांति के साथ मेरे ऑफिस से निकले।"
विक्टर इसके बाद एक पंक्ति लिखते हैं जो इस प्रकार है,
"suffering ceases to be suffering at the moment it fnds a meaning, such as the meaning of a sacrifice."
यहाँ विक्टर फ्रैंकल ने कुछ नहीं किया था, बस उन्होंने उस आदमी का समस्या के प्रति एटीट्यूड को बदल दिया।
इस किताब को उन्होंने जर्मन भाषा में लिखा था, जिस पर एक लेडी ने आपत्ति दर्ज कराते हुए पूछा कि आपने हिटलर की भाषा में ये पुस्तकें क्यों लिखा?

विक्टर ने उनसे पूछा कि क्या आपके घर में चाकू - छूरी हैं?
उस लेडी ने कहा कि - हाँ हैं।
विक्टर ने जवाब दिया कि आपको नहीं मालूम इन चाकुओं के मदद से अपराधी, हत्यारे रोज़ कितने लोगों की हत्या कर देते हैं?
ये किताब एक पढ़ने लायक जरूरी किताब है, जिसे जरूर पढ़ा जाए।

पुस्तक का नाम - "MAN'S SEARCH FOR MEANING"

लेखक का नाम - VICTOR E FRANKL

प्रकाशन वर्ष - 1946

कुल पृष्ठ संख्या - 200

.....

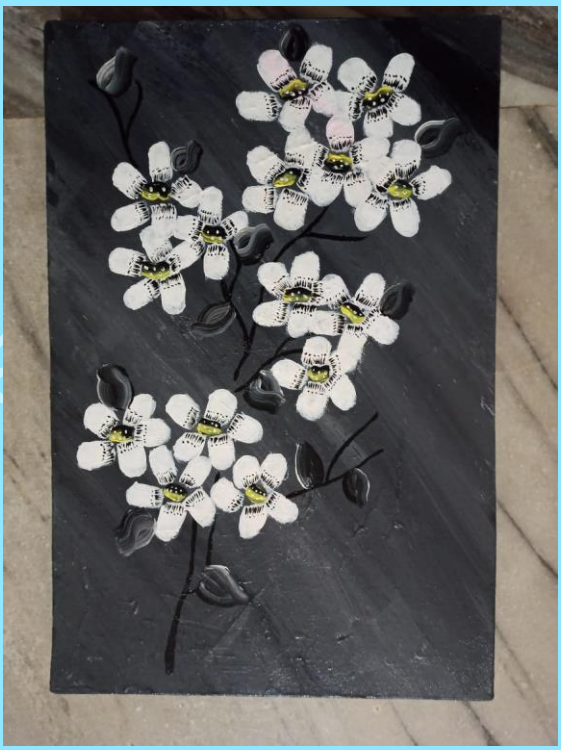

PART 4

Effervescence of English.....

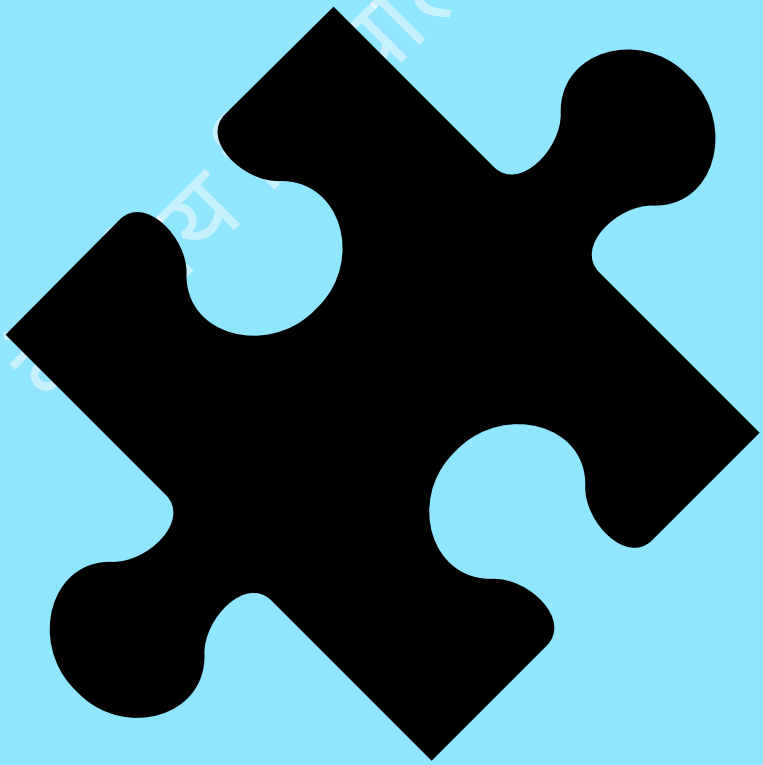

Some interesting facts about wildlife vegetation and humans.

-Anjana Gupta VIII 'B'

1. Queen Alexandra's Birdwing, the largest butterfly in the world with wingspan of 30cm, at least 10 times the size of common butterflies.
2. The flower with the world's largest bloom is the Rafflesia arnoldii. This rare flower is found in the rainforest of Indonesia.
3. Rafflesia is a genus of flower with 28 know species.
4. The femur bone is the longest and strongest bone in the human body. Located in the thighs.
5. Femur bone of woolly rhinoceros is the strongest bone in the animal kingdom.
6. An adult person's heart pumps about 6000 to 7,500 litres of blood daily.
7. When you sneeze, your body expels air, germs, and moisture through the mouth and nose. The speed of our sneezing is about 160 km.

8. World's smallest flowering plant is genus Wolffia.

9. There are more than 100,000 chemical reaction occurring per second in our brain.
10. 20% of Earth's oxygen is produced by Amazon rainforest.
11. A cockroaches leave without head, somewhere about 7 days or less.
12. There's a Prehistoric tree name Dendrosenecio. That's only found in Mount Kilimanjaro.
13. Octopus have nine brain and three hearts. The colour of octopus's blood is blue.
14. A adult person take roughly 20,000 breaths per day.

DREAM

-Rizwanul Haque X 'B'

Everyone have a dream in his life which they want to fulfill or achieve when they grow up. Some kids want to be rich so that they can buy anything and some want to become a doctor or an engineer. But we know that achieving the goals is not an easy work. We need to work hard and stay attentive to it.

DETERMINATION

For turning a dream into reality, the first thing that you need is determination. This will help you in lot of ways. Firstly, it will help you decide the course of action for doing anything. Besides, it will help you in planning the journey ahead. Also, it will help you to take things slow and maintain a steady pace towards the dream.

Moreover, no matter how big my dream planning and setting short term goals will always help. This is important because rushing to your dream is not going to help you in any way. Besides, there are some dreams which need time and they follow a process without following it you can't achieve the dream.

Staying motivated

Lack of motivation is one of the main causes that force a person to leave his dream behind. So, staying motivated is also a part of goal. If you're not positive towards your goal then you can't achieve your dream. There are many people out there who quit the journey of their dreams midway because they lack motivation.

Keep remembering goal

For completing the dream you must keep remembering your dream in the mind. And remind this dream to yourself daily. There are hard times when you feel like quitting at those times just remembering the goal. It will help you in staying positive. And if you feel like you messed up This is the story of a little girl who carries millions of dreams in her eyes and people's criticism on her back. The weight of this criticism is quite heavy but she never stops striding forward. With a smile on her face and lots of creativity brewing in her mind, she never ceases to think outside the box.

Reward yourself

You don't need to cover milestones to reward yourself. Set a small target towards your dream and on fulfilling them reward yourself. These rewards can be anything from toffee to your favourite thing. Besides, this is a good way of self - motivation.

Amazing Facts about the animals

-Riya Kumari IX "A"

1. Owls don't have eyeballs. They have eye tubes.
2. Honeybees can flap their wings 200 times every second.
3. Squirrels can't burp or vomit.
4. A group of parrots is known as a pandemonium.
5. Reindeer eyeballs turn blue in winter to help them see at lower light levels.
6. Butterflies can taste with their feet.
7. Octopuses have three hearts.
8. Dolphins call each other by name.
9. Elephants have a specific alarm call that means "human".
10. Chipmunks about 15 hours of sleep a day.

VOID

- **ANJANI X "A"**

This is the story of a little girl who carries millions of dreams in her eyes and people's criticism on her back. The weight of this criticism is quite heavy but she never stops striding forward. With a smile on her face and lots of creativity brewing in her mind, she never ceases to think outside the box.

She's a five year old girl who doesn't live with her parents, missing them from the moment she wakes up till she goes back to her bed badly. Ask a child about his/her dream and you would get bustling responses of having lots of toys and other belongings, earning a whole lot of money and going to some cool places on holidays. But her only dream is to live with her parents, she wants an ordinary mother who can cook lunch for her and a father who would drop her to school and pick her up. But she could never breathe life into this dream. Everyone thinks living without parents is super fun, that they would be happier when there is no one around to nag or scold for little things. But this illusion isn't so easy to live with in real life. There are millions of children who are dying to live with their parents.

Reasons behind the separation might be diverse. As for this little girl, a hope to get better education had distanced her from her loving parents. Her grandmother was a true companion with whom she discussed most of her things, but somehow the void that was created due to her parents' absence could not be compensated. She goes to

the school , where her best friend shows her a beautiful dress that she got as a birthday gift from her mother. It isn't the dress that makes her nostalgic, it is the mentioning of the word ..."Mother!" . It wasn't the only instance that made her feel miserable from within. This misery was something she couldn't share with anyone, not her friends , not even her grandma. It's not that she hadn't tried ; but to choose the most apt words to portray her thoughts seemed to be the most difficult part.

It was a Monday, and her class teacher had some surprise for the class. " Next Thursday we would have a parent teacher meeting , but we have a special section this time. Every child would have his achievements written on her progress report which shall be read out before his/her parents. Hence, all the students must ask their parents to be present." Her heart skipped a beat. This year, she had a bunch of achievements, both academic and co-curricular . But, these bagful of fulfillments seemed so hollow . That day, she went back home, thinking about the meeting. It was really hard to sleep with such heavy thoughts in her mind. Next morning, she could hear all the students murmuring happily in the class. It was all about how their parents would accompany them, what achievements they had and how proud they'd all feel. How pathetic it was for the little girl to digest all these ! With every passing minute , things went dreadful with her. It seemed as if tears would roll down her eyes any moment and she would burst out crying. But anyhow, with tremendous courage , she kept her emotions chained. It was Wednesday night and the clock struck nine. Only a few hours and she would be seeing all her batchmates feeling proud around their parents. But what about her !? There was nothing much she could do. With great agony , all she could do was wait for the terrible night to be over. The next day she got herself ready to leave for school. It was a usual day, the sun came up as usual, birds were chirping as usual . The honking sound of buses as she reached closer to the school gate was the same as it used to be every day. The voices of some parents could already be heard before she went up the entrance stairs. The lobby could be seen packed with parents who were sitting beside their wards, exchanging happy glances, asking them about their school, friends and what not . Her eyes went rheumy. However wonderful the sight seemed , she just wanted to cast away her gaze when something suddenly caught her eye. Wiping those tears away , she tried to focus on a still figure amidst the crowd. What her mind simply refused to believe was the person in a light green shirt , sitting quietly on the cornermost chair . He seemed a bit anxious , as though waiting badly for someone. Her emotions knew no bounds. Running all the way through the corridor , she caught up with the person and gasped heavily. The school bell rang ! The

teacher of fifth standard started calling out the names of students. "Sunaina..." a few moments later she could hear her name as she stepped into the class . "Are you alone ?" asked Miss Bajaj with a touch of empathy. The girl was silent for the moment. All her classmates watched tensely, waiting for her to answer. After a thoughtful pause, she broke her silence. "Ma'am , I have my uncle with me today !". "And your father ?" came the question from her teacher's end . The question came down like an arrow at her . She remained silent . She didn't have words to express what was boiling within, all that came out were thick droplets of tears dripping down a despondent face....

केन्द्रीय विद्यालय

भाग/PART 5

संस्कृत

संस्कृत भाषायाः परिचयः

-निधि कुमारी नवम "अ"

संस्कृतम् जगतः अतिप्राचीना समृद्धा शास्त्रीया च भाषा वर्तते। संस्कृतम् भारतस्य जगत: च भाषासु प्राचीनतमा। संस्कृता वाक्, भारती, सुरभारती, अमरभारती, अमरवाणी, सुरवाणी, गीर्वाणवाणी, गीर्वाणी, देववाणी, देवभाषा, दैवीवाक् इत्यादिभिः भारतीयभाषासु बाहुल्येन संस्कृतशब्दाः उपयुक्ताः। संस्कृतात् एव अधिका भारतीयभाषा उद्भूताः। तावदेव भारत-युरोपीय-भाषावर्गीयाः अनेकाः भाषाः संस्कृतप्रभावं संस्कृतशब्दप्राचुर्यं च प्रदर्शयन्ति एतद्भाषा प्रसिद्धा। भारतीयभाषासु बाहुल्येन संस्कृतशब्दाः उपयुक्ताः। संस्कृतात् एव अधिका भारतीयभाषा उद्भूताः। तावदेव भारत-युरोपीय-भाषावर्गीयाः अनेकाः भाषाः संस्कृतप्रभावं संस्कृतशब्दप्राचुर्यं च प्रदर्शयन्ति।व्याकरणेन सुसंस्कृता भाषा जनानां संस्कारप्रदायिनी भवति। अष्टाध्यायी इति नाम्नि महर्षिपाणिनेः विरचना जगतः सर्वासां भाषाणाम् व्याकरणग्रन्थेषु अन्यतमा, वैयाकरणानां भाषाविदां भाषाविज्ञानिनां च प्रेरणास्थानं इवास्ति।संस्कृतवाङ्मयं विश्ववाङ्मये स्वस्य अद्वितीयं स्थानम् अलङ्करोति। संस्कृतस्य प्राचीनतमग्रन्थाः वेदाः सन्ति। वेद-शास्त्र-पुराण-इतिहास-काव्य-नाटक-दर्शनादिभिः अनन्तवाङ्मयरूपेण विलसन्ती अस्ति एषा देववाक्। न केवलं धर्म-अर्थ-काम-मोक्षात्मकाः चतुर्विधपुरुषार्थहेतुभूताः विषयाः अस्याः साहित्यस्य शोभां वर्धयन्ति अपितु धार्मिक-नैतिक-आध्यात्मिक-लौकिक-पारलौकिकविषयैः अपि सुसम्पन्ना इयं देववाणी।

आदर्श छात्र:

-उत्सव भारती दसवी 'ब'

छात्रजीवनः मनुष्यजीवनस्य स्वर्णकालः भवति। छात्रजीवने मनुष्यः ज्ञानं लभते। ज्ञानेन मानवाः स्वजीवनस्य संकटस्य निवारणम् कुर्वन्ति। विद्या ददाति विनयम्। विद्या विना मनुष्यः पशुतुल्यो भवति।

उक्तं हि -

येषां न विद्या न तपो न दानं, न ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।

ते मृत्युलोके भुवि भारभूता, मनुष्यरुपेन मृगाश्चरन्ति।।

आदर्श छात्रे अनेके गुणाः भवति। एकः आदर्श छात्रः सर्वदा मधुरभाषी भवति। सः कदापि असत्यं न वदति। सः कदापि समयं न नाशयितव्यः। सः पापात् विभेति च।

एवोच्यते -

काक चेष्टा, वको ध्यानं, स्वान निद्रा तथैव च।

अल्पहारी, सदाचारी विद्यार्थी पञ्च लक्षणं।

अस्माकं सदा उपर्युक्त गुणस्य अनुपालनम् कुरु। अस्माकं अपि राष्ट्रस्य, समाजस्य

.....

महर्षिः वाल्मीकिः

-स्वर्णा मंडल सप्तम "ब"

महार्षिः वाल्मीकिः संस्कृतभाषायाः आदिकविः अस्ति। तस्य रामायणम् आदिकाव्यम् वर्तते अस्य महाकवेः वानी सम्पूर्ण- जगतस्य कृते मंगलकारिणी आनन्द दायिनी च अस्ति| अयं आदिकवि वाल्मीकिः आंगिरसगोत्रे जन्म अलभत्।बाल्यकालस्य नाम रत्नाकरः आसीत् | असौ रत्नाकरः भिल्लानां संगतिकारणात् निर्दयः दस्युः अभवत् | अतः अयम् दस्युकर्मणा स्वजीवननिर्वाहम् अकरोत् | एकदा साः नारदादि - मुनीन् गच्छतः दृष्टवा स्वधनं दातुम् अकथयत् | ते अपृच्छन् यत् किम् एतस्मिन् पापकर्मणि तव परिवारस्य सदस्याः सहभागिनः भविष्यन्ति| अयं तान् मुनीन् रज्जुभिः बद्ध्वा स्वगृहम् अनयत् अपृच्छत् च | ते अवदन् अस्माकं परिपालनं तव कर्तव्म् वयम् तव पापे समभागिनं कथं भविष्यामः ? अनेन आघातेन सः दस्युकर्म अत्यजत् तप् कर्तुम् च निर्णयं कृतवान् | अनेन सः कठिनः तपः तप्तुम आरभत् सर्वेषां वृद्धजनानां च सेवां करणीयः। अस्माकं राष्ट्रस्य कल्याणे एव अस्माकं सुखं निहितं अस्ति।

जयतु संस्कृतम्, जयतु भारतम्।

वैश्विकमहामारीकोरोणा

हंसी कुन्डु
स्नातक प्रशिक्षित शिक्षक संस्कृत

अशेषे हि विश्वे अद्यत्वे कोऽपि सुखं नानुभवति। अस्माकं जीवने शारिरिकं,मानसिकं,आर्थिकं च बहुविधं संकटानि आगतानि सन्ति।कोरोणा रोगेण जनाः ग्रसिताः सन्ति।न केवलं भारतदेशे अपितुनिखिले संसारे सर्वे जनाः भयाक्रान्ताःजाताः। अद्य प्राणरक्षा एव सर्वोपरिःवर्तते। सर्वासां वस्तूनां मूल्यम् अपि महार्घं जातम्।स्वजीवनंचालयितुं न्यूनाधिकं वस्तूनि अपेक्षितानि सन्ति। महाकविकालिदासेन उक्त "शरीरमाद्यं खलुधर्मसाधनम्"। स्व परिवारेणसह यदि कोपि कुत्रापि सुरक्षितः वर्तते तर्हि इदं तस्य सौभाग्यं वर्तते। अस्माकं देशे कोऱणाग्रसिताः केचन जनाः औषध्याभावे कालकवलिताः जाताः। अस्मान् सर्वान् जनान् कोरोणा अद्य शिक्षयति आत्मसुरक्षा एव देशस्य महती सुरक्षा अस्ति।अस्मिन् कोरोणा काले सैनिटाइजरप्रयोगः,हस्तप्रक्षालनं,मुखाच्छादनं, दूरस्थता अतिआवश्यकी अस्ति।

अस्माकं केन्द्रीयः च प्रादेशिकी सर्वकारःजनानां सुरक्षार्थं प्रबंधःक्रियते।आनलाईन माध्यमेन शिक्षकाःशिक्षिकाश्च छात्रान् पाठयन्ति।केचनजनाःकथयन्ति कोरोणा वायु माध्यमेन सर्वत्र प्रसरति।अस्मिन्संक्रमणकाले चिकित्सकाः,अध्यापकाः,सैनिकाः च एते सर्वे कर्मचारिणःस्वकर्तव्यस्य सुचारू रूपेण पालनं कुर्वन्ति।इदानीं कोविशिल्ड,कोवैक्सीन च अस्यरोगस्य निवारणं चिकित्सकाः कथयन्ति।स्वस्थपर्या्वरणम,हस्तप्रक्षालनं, सैनीटाइजर प्रयोगं एव समस्या नां निदानं उपचार च वर्तते।वैज्ञानिकाः अपि नूतनाःआविष्काराः कुर्वन्ति।आशासे आगामिदिनेषु वयं अस्य रोगस्य उपरि विजयः प्राप्स्यामः।सर्वेषांकृते इयं अहं प्रार्थयामि यत्-सर्वे भवन्तु सुखिनः,सर्वे सन्तु निरामया।सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दुःखभाग भवेत्। ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः।

सुभाषचन्द्र बोस

- लकी भराली

1) बिश्वेऽसमिन स्वतंत्रतासेनानी सुभाषस्य नाम को न जानाति। सः क्रांतिकारी नेता आसीत। अस्य जन्म बंङ्गप्रान्ते (1897) तमे जनवरी मासस्य (23) तारिके अभवत।

2) सुभाषचन्द्र बोसः एक: महान क्रांतिकारी नेता आसीत्।

3) अस्य पिता जानकीनाथ बोस : माता च प्रभावति देवी आसीत् ।

4) तस्य पिता जानकीनाथ : विचक्षण : वक्कील : आसीत् ।

5) सः बाल्मकालादेव बुद्धिमान धीरः साहस युक्त: आसीत्।

6) सुभाषचंद्र बोस : जनान आह्वानं अकरोत यूयं मह्यां रक्तम् अर्पय अहम युष्मभ्यं स्वातन्त्रता दास्यामि ।

7) सः भारतीय जनानां प्रेरणा स्त्रोत: आसीत्

8) अस्य पत्न्याः नाम इमिलि सिंकल आसीत्।

9) तस्य राजनैतिक्गुरू: चित्तरञ्जनदास : आसीत् ।

....

मम अभिलाषः

यश राज छठी 'ब '

अहम् गृहं गच्छमि
तत्र फलं खादामि
पिवामि जलं शीतलम्
गायामि तत्र गीतं
मेलामः तत्र सह मित्रैः
खेलामः वयं सर्वाः।

सर्वदा जयं भवेत्

-आदित्य राज आठवीं 'ब'

सर्वदा जयं भवेत्
भारत- देशस्य।
शक्ति सम्पन्नम्
युक्ति सम्पन्नम्
सर्वदा जयं भवेत्

भारत- देशस्य।

सर्वदा जयः भवेत्

भारतस्य वीरस्य।

मार्ग दर्शकः शत्रु नाशक :

सर्वदा जयं भवेत् देश -रक्षकस्य।

सर्वदा जयं भवेत्

सर्वदा जयं भवेत्।

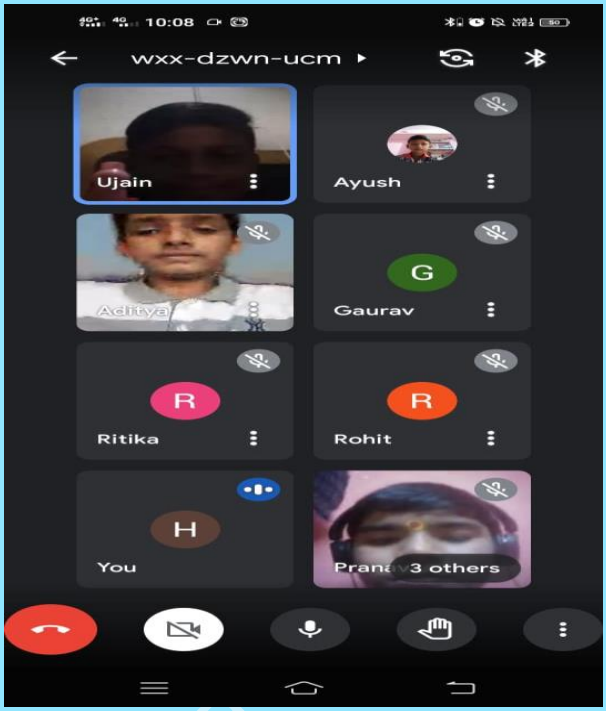

भाग/Part- 6 - गतिविधियाँ

स्काउट और गाइड

primary CCA 04-07-20

K.V.PATRATU
Primary Webinar
On Gandhi Ek Vichar Dhara
3-oct-20

CCA Hindi Extempore

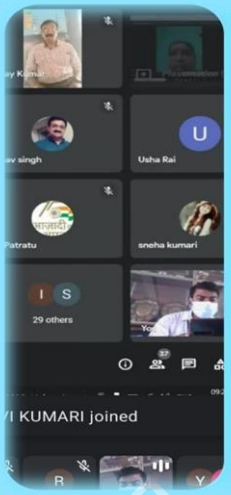
Usha Rai
sneha kumari
29 others
KUMARI joined

MANORANJAN KUMAR
Pranav Vishwakarma joined

हिन्दी दिवस और हिन्दी पखवाड़ा
PUSPANJALI SAHOO
USHA RAI
Jungbahadur Pandey
manoranjan kumar

REDMI NOTE 8 PRO
MANORANJAN KRISHNA
2021/3/8 10:16

REDMI NOTE 8 PRO
V PARMAR
2020/10/2 08:18

LIVE
NEWS
BREAKING NEWS

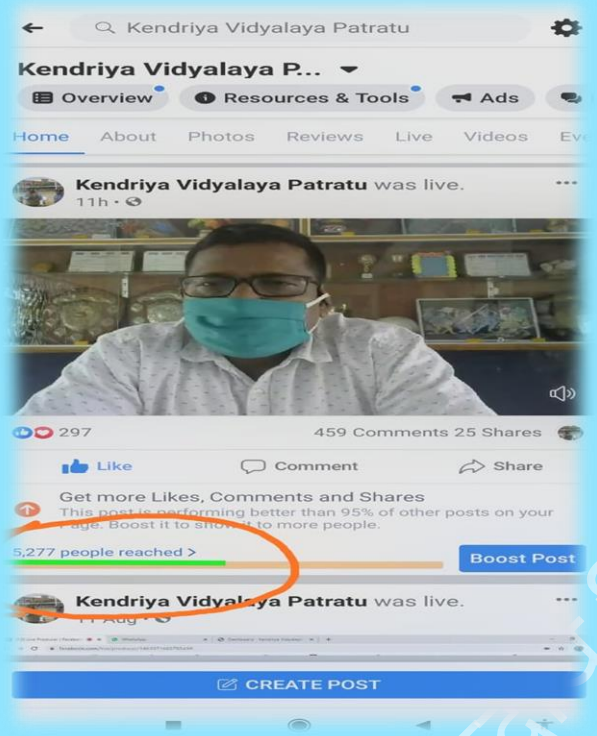
Kendriya Vidyalaya Patratu
Kendriya Vidyalaya P...
Overview
Resources & Tools
Ads
Home
About
Photos
Reviews
Live
Videos
Kendriya Vidyalaya Patratu was live.
11h
297
459 Comments 25 Shares
Like
Comment
Share
Get more Likes, Comments and Shares
This post is performing better than 95% of other posts on your Page. Boost it to show it to more people.
5,277 people reached >
Boost Post
Kendriya Vidyalaya Patratu was live.
CREATE POST

Megha Parmar
kumar sagar
Kriti Kumari
arnav singh
Anu Kumari
Swapnil Srivastava

Meeting details
K.V.Patratu
Gandhi Ek Vichar Dhara
Primary webinar on 3-oct.20

Plog Run